ॐ नमः जुमलेश्वराय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः सिद्धेश्वराय:

श्री सिद्धेश्वर महादेव मन्दिर इतिहास
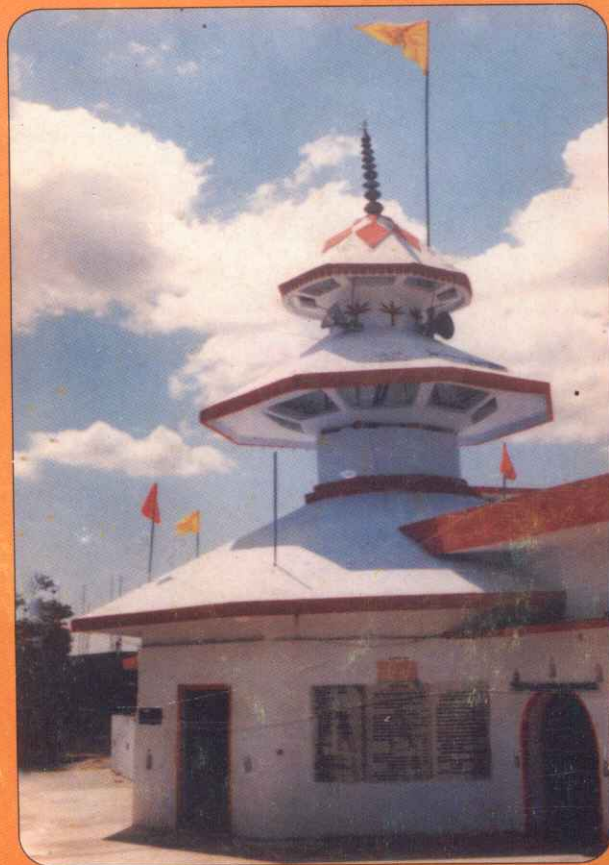
तप-स्थली

सिद्धेश्वर आराधना

ओऽम श्री सिद्धेश्वराय नमः

श्री सिद्धेश्वर महादेव जी की कथाएं अत्यन्त रमणीय, पुण्य–कारक एवं शुभ–फलदायक है।

भक्ति–भाव से ही प्रसन्न होने वाले, भक्तों को सिद्धि रूपी वरदान देने वाले, सिद्ध पुरूषों के तथा सिद्धों के अधिपति सिद्धेश्वर के लिये नमस्कार है।

पार्वती, गणेश, कार्तिकेय, नन्दिश्वर, कुबेरादि सम्पूर्ण परिवार सहित आपको नमस्कार है।

अभय वरदान देने वाले, महाभय नाश करने वाले, भय से अभय करने वाले महादेव आपके लिये नमस्कार है।

कैलाश, जुमला पर्वत पर निवास करने वाले, भक्तों के मन में निवास करने वाले तथा द्रोणाश्रम (देहरादून नामक स्थान) में निवास करने वाले आपके लिय नमस्कार है।

लक्ष्मण दास जैसे भक्तों को भक्ति रूपी प्रसाद देने वाले एवं दीनों के नाथ कहलाने वाले आपके लिए नमस्कार है।

अन्धकार रूपी अज्ञान को दूर करने वाले तथा प्रकाश रूपी ज्ञान प्रदान करने वाले, गौमता, पृथ्वी, आकाश, पातालादि की रक्षा करने वाले आपके लिए नमस्कार है।

सिर रूपी पशुपतिनाथ तथा धड़ रूपी केदारनाथ को वांछित सिद्धि देने वाले सिद्धेश्वर आपके लिए नमस्कार है।

सिद्धेश्वर, आपके अनन्त नामों में विश्वनाथ, वैद्यनाथ, रामनाथ, सोमनाथ, महाकालेश्वर नाथ, भीमेशादि का आह्वान करते हैं।

अमरनाथ, वाणेश, तारकेश्वर, मल्लिकार्जुन, घुश्मेश आदि का आह्वान करते हैं।

ओमकारनाथ, यक्षेश, त्र्म्बकेश, हाटकेश्वर, कुम्भेश, नटराज आदि का आह्वान करते हैं।

द्वारकेश, जगन्नाथ, बद्रीनाथ, सम्पूर्ण देवों के ईश्वर, सिद्धेश्वर आपकी हम स्तुति करते हैं।

वीरभद्र, भैरव, क्षेत्रपाल, त्रिशुलधारी, डमरू रूपी शब्द से वेदों का दर्शन कराने वाले आपके लिए नमस्कार है।

जय और अजय को देने वाले तथा विजय और अविजय को प्रदान करने वाले, मुख में सरस्वती प्रदान करने वाले, पार्वती पति आपको नमस्कार है।

ऋद्धि–सिद्धियों सहित भूर्भूव स्वः इत्यादि लोकों के पति एवं तैंतीस कोटि देवताओं के पति जिनके समान कोई अन्य नहीं, उनके लिए बारम्बार नमस्कार है।

कुल–वृद्धि के लिए काम धेनु रूपी एवं धर्म–वृद्धि के लिए नन्दी रूपी सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाले आपके लिये नमस्कार है।

नीलकण्ठ एवं पार्वती पति आपको नमस्कार है।

शिव के लिए सदा संसार में व्यवहार उपदेश के लिए बारम्बार नमस्कार है।

जिनके पूरब में पुण्य कारक गंगा जी तथा पश्चिम में जमुना जी चरणों का प्रक्षालन करती हुई बह रही है, ऐसे श्री सिद्धेश्वर महादेव जी की हम वन्दना करते हैं।

देहरादून के केदारपुर ग्राम में स्थित सिद्धेश्वर महादेव जिनकी कथा का वर्णन किया जा रहा है, उनको हम बार–बार प्रणाम करते हैं।

सुनने वाले सम्पूर्ण देवता, मानव, दानवादि को शिव परिवार शान्ति प्रदान करे।

मंगलाचरण स्तुति

इसमें सबसे पूर्व परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना, उपासना से मंगलाचरण करके इस ग्रन्थ का आरम्भ करते हैं।

ओम् निज नामवाला परमेश्वर, जो जगत का मित्र है, सबसे श्रेष्ठ हे, न्यायकारी, दयालु है, परम ऐश्वर्यवान है, वेद ज्ञान और लोक–लोकान्तरों का स्वामी हे, सब जगत में व्यापक है और अनन्त पराक्रमी है, वह परमेश्वर हम सबके लिए शान्ति और सुख–कल्याण करने वाला है।

हम परब्रह्म को नमस्कार करते हैं। हे! चराचर जगत् के संचालक वायु रूप परमेश्वर, हम आपको नमस्कार करते हैं। हे! ईश्वर, आप ही अंतर्यामी मी रूप से प्रत्यक्ष ब्रह्म हैं। आप ही को मैं प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूगां। हे! प्रभो, वेदस्थ शाश्वत सत्य का ही मैं उपदेश और आचरण करूगां। सर्वदा सत्य बोलूगां, सत्य मानूगां और सत्य ही करूगां। मुझ सत्य–वक्ता की रक्षा कीजिए, जिससे आपकी आज्ञा से मेरी बुद्धि स्थिर होकर कभी विरूद्ध न हो। हे! शान्ति प्रदायक, परमात्मन्, हमारे दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से हमारी रक्षा करें।

श्री सिद्धेश्वर महादेव, एक प्रेरणा स्त्रोत

देहरादून शहर के लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर धर्मपुर, मोथरोवाला मार्ग के अन्तर्गत ग्राम केदारपुर में श्री सिद्धेश्वर महादेव पशुपति आश्रम स्थित है, जिसका संचालन उक्त समिति द्वारा कियाजाता है यह एक पंजीकृत आश्रम है, जिसका अपना एक अनूठा इतिहास है।

वर्ष 1976, माह जनवरी4 को इस मन्दिर की स्थापना भगत लक्ष्मण के स्वप्न द्वारा हुई थी। हुआ इस प्रकार कि रात को भगवान शंकर ने स्वप्न में भगत लक्ष्मण को आदेश दिया कि "तू मेरी पूजा अर्चना कर, उसी में तेरा और जनता का कल्याण होगा"। भगत लक्ष्मण परेशान थे कि किस विधि से और कहां पूजा अर्चना कि जाये? अतः रात को सोते समय यही विचार लेकर वह सो गये तो, उनको एक सफेद वस्त्र में एक फकीर गले में रूद्राक्ष की माला, हाथ में त्रिशूल लिये, आकर बोले कि "इस स्थान अर्थात धर्मपुर से तीन किलोमीटर दूर चाय बगान के पास मन्दिर बनाकर तू मुझे पूजना "। उन्होने यह भी कहा कि 21 दिन तक जो धूप, दीप के साथ मेरा पूजा अर्चना करेगा, उसका कल्याण होगा"।

इस स्थान पर पूजा अर्चना का कार्य 15 माह तक चला था कि पुनः आदेश हुआ कि भगत"तुम नेपाल में जुमलेश्वर के पास कैलाश महामू पर्वत पर जाओ। वहां मेरा स्थान है। जहां पर तुम्हें झण्डा, शिवलिंग तथाप्रतिमा प्राप्त होंगे। उसे लाकर इस स्थान पर विधिवत स्थापना करना"।

आदेशानुसर भगत जी महामू पर्वत अपने भाई रघुवीर के साथ पहुंचे, लेकिन वहां जाकर भ्रमित हो गये। तो एक साधारण मनुष्य के रूप में किसी व्यक्ति ने उनका मार्ग दर्शन किया और उस स्थान पर पहुंचाया , जहां पर शिवलिंग प्रकट था। इस बीच उनके भाई कहां रहें, उनका पता नहीं चला। बाद में जब वे लौटे, तो उनके साथ मुलाकात हुई । वहां से लौटकर 4 अगस्त 1977 को "रक्षाबन्धन"के शुभ मुहर्त पर तीनो अमूल्य चीजों को मन्दिर में विधिवत प्रतिष्ठित किया ।

इसके कुछ दिन पश्चात् भागीरथी नदी में पर्वत गिर जाने से प्रवाह अवरूद्ध हो गया और ऐसी आंशका हुई कि यह टूटने पर सारा ऋषिकेश, हरिद्वार जलमग्न हो जायेगा। लेकिन प्रभु की कृपा अपार है, भगवान

सिद्धेश्वर ने भगत लक्ष्मण को यह कहा कि तुम "21 दिन अखण्ड ज्योति जलाकर निराहार, एक पैर पर खड़े रहकर तप करोगे तो ये सब शान्त हो जायेगा। भगत लक्ष्मण एक साधारण वाहन चालक के रूप मे जल संस्थान मे कार्यरत थे। वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गये, लेकिन भगवान पर इनका अटूट विश्वास था। जनवरी 1978 को जब तप समाप्त हुआ, तो यह जानकारी हुई कि भागीरथी की सम्भावित घटना टल गयी है।

इधर मन्दिर में स्थापित शिवलिंग की पूजा अर्चना बराबर चलती रही । श्रद्धालुओं की भीड़ आकर्षित होती गयी, पूजन कीर्तन का सिलसिला भी जारी रहा ऐसा आभास होने लगा किसी शक्ति ने अपना करिश्मा दिखाना शुरू कर दिया। शिवलिंग से शंख की ध्वनि बड़े मधुर और गीतमय आवाजो मे निकलने लगी । ऐसा लगता था, मानो शंख से उनका उच्चारण हो रहा हो। भक्तजनों की मनोकामनायें भी पूरी होने लगी । भक्तजनों की शादी विवाह,मुकदमा, सन्तान आदि के मामलों में उपासना व फलस्वरूप शुभ परिणाम प्राप्त होने लगा, किन्तु विशेष बात यह थी कि कम से कम 21 दिन तक पूजा अर्चना करनेपर यह लाभ प्राप्त होता था। इसके पश्चात वर्ष 1989 में भक्त जी को आदेश प्राप्त हुआ की वे मन्दिर परिसर में विश्व शान्ति महायज्ञ करें। भक्त जी ने इस बात की चर्चा मन्दिर कमेटी के सदस्यों से की तो वे असमर्थता दिखाते हुये कहने लगे कि विश्व शांति महायज्ञ करना आसान नहीं है। मन्दिर समिति के पास धन का बड़ा अभाव है। खर्चे की व्यवस्था होना कठिन है, इतना ही नहीं नवरात्रों का समय है। पंडित जी आज भी स्थान–स्थान पर पाठ करने में व्यवस्त रहेंगे। इस पर भक्त जी अड़ गये और कहने लगे यह भगवान सिद्धेश्वर का आदेश है, उसे पूरा करना मेरा परम कर्तव्य है। आप लोग किसी की चिन्ता न करें। केवल मुझे मेरे कार्य में क्षमतानुसार सहयोग दें। उन्होंने एक पंडित को वृन्दावन भेजते हुये कहा कि वहां के पंडित को कह देना – "यह भगवान शंकर का आदेश है।" आप लोगों को आना होगा, समिति के पास धनाभाव है, किन्तु धन जुटाने का प्रयास किया जायेगा तथा आप लोगों को दक्षिणा अवश्य दी जायेगी। हाँ, यदि धन नहीं जुटा तो निःशुल्क करना होगा। पहले तो मुख्य पंडित जी ने मना कर दिया, लेकिन दूसरे दिन प्रभु प्रेरणा से हां में बदल दिया और दो पंडितों को तुरन्त देहरादून विश्व शांति महायज्ञ की व्यवस्था हेतु भेज दिया और दो दिन

बाद स्वयं अन्य पंडित के साथ हाजिर हो गये और विश्व शांति महायज्ञ प्रारम्भ हो गया। कुल पण्डित जी की संख्या 13 थी। यह यज्ञ 21 दिन तक धूम धाम से सम्पन्न हुआ। मंदिर परिसर में अपार भीड़ एकत्र होकर भजन कीर्तन आदि से सारे वातावरण को भक्ति मय बना रहे थे, तथा पण्डितों द्वारा जोर-जोर से वैदिक मंत्रों के उच्चारण से आनन्द की अनूभूति हो रही थी। इधर 21 दिन तक लगातार भन्डारा चल रहा था। फल-फूल राशन पानी दूध हवन सामग्री आदि प्रचुर मात्रा में भक्तों द्वारा लायी जा रही थी। किसी चीज का अभाव नहीं था सब कार्यक्रम बड़े उत्साह एवं उमंग के साथ भली-भांत सम्पन्न हुये। ऐसा आभास हुआ कि भक्त लक्ष्मण जी के इस पूरे 21 दिन की अवधि में एक पैर पर खड़े होकर तप करना विश्व शान्ति महायज्ञ की सफलता की कुंजी थी। प्रारम्भ में जहां धनाभाव की कमी आड़े आ रही थी बाद में धन भोजन सामग्री प्रसाद के लिए फल फूल पर्याप्त मात्रा में प्राप्त हुआ पंडितों को 3-3 हजार रूपया नकद दक्षिणा तथा अंग वस्त्र आदि दान देने में भी सफल रहे।

इसके पश्चात भक्त जी का रूझान भक्ति की ओर बढ़ता गया। 1977 में उन्होंने मंदिर के अन्दर भगवान सिद्धेश्वर के आदेश से एक गुफा बनवायी थी किन्तु काम न हो पाने के कारण वे उसमें प्रवेश नहीं कर पाये थे। उनको गुफावास करना जरूरी था कारण जब वे 13 वर्ष के थे तो एक पहुंचे हुये साधु जो एक वृक्ष के नीचे रहते थे उन्होंने कहा था बेटा तू आगे चलकर गुरू बनेगा और तेरी आयु 55 वर्ष की होगी। अतः विश्व शान्ति महायज्ञ की सफलता एवं भगवान शंकर के आशीर्वाद ने वर्ष 1989 के अन्त में निर्वस्त्र होकर निराहार रहकर गुफा के चारों ओर से चिनाई द्वारा बन्द कर 40 दिन तक इस गुफा के अन्दर रहे, जिसे गर्भ गुफा कहा गया यह कठोर तपस्या की, जिसके फलस्वरूप इनको एक मंत्र प्राप्त हुआ। जिसके द्वारा इससे जो भक्त गुरू मंत्र लेगा तथा इनके बताये रास्ते में चलेगा उसको मोक्ष की प्राप्ति होगी। यह दीक्षा गुरू पूर्णिमा रक्षा बन्धन एवं शिवरात्री के पर्व समय में बड़े विधि-विधान के पश्चात दिया जाता है।

भक्त जी प्रत्येक वर्ष श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर में जुमला महामू पर्वत नेपाल से लायी हुई झण्डा, मूर्ति व शिवलिंग, इन तीन वस्तुओं का रक्षा बन्धन के दिन में पांच दिन तक निराहार गुफा में निवास करके तत्पश्चात

जुमलेश्वर महादेव का पूजन किया करते थे, किन्तु इस वर्ष 2001 को भक्त जी की इच्छा हुयी कि मैं जुमला महामू पर्वत में जाकर पूजन करूं। इस इच्छा से वे जुमला महामू पर्वत पहुंचे। रक्षा बन्धन के दिन वहां पर भक्तगण एकत्र होकर पूजन करते हैं। सायं लगभग 3 बजे का समय था। देखते–देखते कुछ लोग वहां पहुंचे साथ में लड़कियां भी थी। एक लड़की इस शिवलिंग के ऊपर चढ़कर बोलने लगी – "यहां पर अब शिव शक्ति नहीं हैं आप लोग देख रहे हो मैं इस शिवलिंग के ऊपर चढ़ी हुयी हूं, अगर इसमें शक्ति हो तो मेरा पैर टूट जाये तथा मेरा पैर इसमें चिपक जाये। तब मैं मानूंगी कि यहां शक्ति है। यहां के ब्राह्मणों ने अनाचार करके व हत्याये करके इस शक्ति को लुप्त कर दिया है। क्या भगवान शंकर बकरे का खून पीते हैं"? इतना बोलकर वह शिवलिंग से नीचे उतर गयी। नीचे उतरक जो चढ़ावा, सामान, झण्डा था वह समस्त फेंक दिया। तत्पश्चात् इस लिंग को हिलाने लगी और शिवलिंग हिल गया। एक सोलह–सत्रह वर्ष के लड़के ने उस शिवलिंग को धक्का दिया, तो वह लिंग टूट गया जबकि भक्त जी प्रत्येक वर्ष उस स्थान से लायी हुई झण्डा, मूर्ति व शिवलिंग की प्रत्येक वर्ष यहीं पूजा किया करते थे। इस वर्ष वहां जाना उनके समक्ष शिवलिंग टूटना इसका अर्थ है कि भगवान शिव ने भगत जी को यह दर्शाया है कि मैं केदारपुर सिद्धेश्वर महादेव पशुपति मंदिर में ही हूं। मैं यहां पर नहीं हूं। तुम्हें यहां आने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि भगत जी का वहां जाना और उनके सामने शिवलिंग का टूटना, यह प्रमाणित करता है कि वहां की शिव शक्ति केदारपुर मंदिर में ही आयी है। तीन वस्तुओं के यहां आने के पश्चात् उन्होंने कई चमत्कार दिखाये हैं। इसका अर्थ था मैं यहां आ गया हूं।

श्री सिद्धेश्वर महादेव मन्दिर केदारपुर में जुड़वा शिवलिंग प्राप्त होने तथा जुड़वा शिवलिंग से ओमकार की आवाज प्रकट होना क्या कारण था इस विषय में मुझे जो दृष्टान्त प्राप्त हुआ सो इस लेख के माध्यम से आप सभी भक्तों को अवगत कराना चाहता हूँ ।

जुड़वा शिवलिंग प्राप्त होने का अर्थ था कि इस स्थान में प्रथम बार शिव और सती की भेंट हुई थी। सती राजा दक्षप्रजापति की प्रिय पुत्री थी। राज घराने में लाड प्यार मे पली हुई अति सुन्दर पुत्री जब जवान अवस्था में आई तो माता को चिन्ता होने लगी कि मेरी पुत्री को कैसा वर मिलेगा ।

स्वाभाविक है कि जब घर मे कन्या जवान अवस्था में आने लगे तो माता–पिता को चिन्ता होने लगती है ।

एक बार राजा दक्ष प्रजापति के महल में नारदमुनि आये हुए थे। नारद मुनि भूत भविष्य और वर्तमान की सब बातों को जानते हैं । इस लिये सती की माता ने नारद से सती के विषय में पूछा कि मुनि देव कृपा करके पुत्री सती का भविष्य कैसा रहेगा , इसको कैसा वर मिलेगा।

नारद जी सती की हस्त रेखा देख कर बोले माता तुम्हारी पुत्री की हस्त रेखा अति उत्तम है। इस को ऐसा वर मिलेगा जो देवों के देव त्रिलोकी नाथ जैसा होगा । सती की मन में इस बात का असर पड़ गया कि मुझे देवों के देव त्रिलोकीनाथ जैसा वर मिलेगा । त्रिलोकीनाथ तो केवल शिव ही है । फिर शिव तो कैलाश वासी है, और ब्रह्मचारी है उनको गृहस्थी ओर स्त्री से क्या वास्ता वह तो संसार के मालिक है। उन्हें मैं कैसे प्राप्त कर सकती हूँ । इस बात का सती के मन में उथल पुथल हाने लगी । आखिर सती के मन में विचार आया कि वह ईश्वर है ईश्वर को प्राप्त करने के लिये तप करते है। शिव को प्राप्त करने के लिये मै भी तप करूँगी । सती ने शिव को प्राप्त करने के लिये तप करने का संकल्प मन मे धारण कर लिया अब धारण तो कर लिया मगर कैसे करें ओर कहाँ करे। सती के मन में सूझा कि नदी के किनारे ही एकान्त स्थान हो सकता है उस युग में सिद्धेश्वर मन्दिर के उत्तर पश्चिम की और से शितला नहर बहती थी और यह स्थान एकान्त था । सती सखियों के साथ टहलने के बहाने इस स्थान मे पहुँची । यह स्थान सती को बहुत पसन्द आया । एक दिन सती ने अपनी मन की बातें अपनी मां को बता दी । सती बोली यदि में विवाह करूँगी तो शिव के साथ करूँगी अन्यथा मैं कुंवारी रहूँगी । मां सती को समझाते हुए बोली बेटी शिव तो जगत के ईश्वर है फिर वह बाल ब्रह्चारी कैलाशवासी है उनको तू केसे प्राप्त कर सकती है ऐसी जिद नही करते । तब सती ने मां को कहा मां मैं शिव को प्राप्त करनें के लिये तप करूँगी मां के अनेक प्रकार से समझाने पर भी सती ने अपनी जिद नहीं छोड़ी । सती ने मां को तप करने का स्थान भी बता दिया । तब सती की माता बोली तप कहाँ करेगी सती बोली शीतला नहर के तट पर तप करूँगी मां ने अपनी पुत्री सती की सारी कहानी अपने पति राजा दक्षप्रजापति को सुना दी । पिता ने अपनी पुत्री को समझाते हुए कहा बेटी

वह शिव भगवान है वह तो संसार के ईश्वर वह कैलाशवासी बाल ब्रह्मचारी हैं । वह आज के नहीं आदि काल वाले है उनके साथ बड़े बड़े भयानक गण लोग रहते हैं। सती के पिता ने अनेक भय दिलाते हुए अपनी पुत्री को समझाया । सती माता पिता की प्यारी पुत्री थी इसके लिए एक से एक राज पुत्रवर मिल सकते थे किन्तु सती को शिव के अलावा अन्य कोई नजर नही आता था । जब पिता को मालूम हुआ कि सती शिव के अलावा अन्य को स्वीकार नहीं करेगी । वह शिव को प्राप्त करने के लिए तप करने जायेगी तब राज दक्षप्रजापति ने सती को तप करने के लिये केदारपुर में सुन्दर मन्दिर बना दिया था। मन्दिर की दीवार चांदी से तथा छत सोने से जड़ी हुई थी। इस मन्दिर में सती ने शिव को प्राप्त करने के लिये घोर तपस्या की । सती के कई वर्ष तप करने पर भगवान शंकर की दृष्टि सती की तपस्थली पर पड़ी । भगवान शंकर सती की तपस्या से प्रसन्न हो कर सती को वरदान देने के लिये केदारपुर सिद्धेश्वर महादेव मन्दिर में आकर सती से बोले "हे तपस्विनी मैं तुम्हारे तप से प्रसन्न हूँ मांगो जो तुम मांगोगी मैं पूरा करूँगा"।

भगवान शिव के वचन सुनकर सती मुस्कराती हुई बोली प्रभु आप मेरी तपस्या से प्रसन्न हो तो वचन दीजिये मैं जो मांगूगी वह देना होगा । शिव ने वचन दिया तब सती अपनी करूणा दृष्टि से भगवान शिव के मुख की ओर देखते हुए हाथ जोड़कर बोली प्रभु मुझे संसार की कोई वस्तु नहीं चाहिए मैंनें केवल आपको प्राप्त करने के लिये ही तप किया है। आप मेरी तपस्या से प्रसन्न हैं तो आप मुझे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करें मैं आपकी स्त्री के रूप में आपकी सेवा करना चाहती हूँ ।

भगवान शिव मुस्कराते हुए सती की और देखकर बोले हे तपस्वनी मैं जानता था कि तुम क्या मांगोगी तुम्हारा और हमारा सम्बन्ध आज से नहीं है जब हम हुए थे तब तुम हुई थी तुम्हाराऔर हमारा सम्बन्ध शारीरिक है तुम और हम एक हैं तुम तो सदा मेरी पत्नी रहोगी। ऐसा वरदान देकर शिवव अन्तर्ध्यान हो गये ।

सती ने जिस कामना के लिए तपस्या की थी उस कामना के अनुसार वर प्राप्त कर हर्ष के साथ अपने पिता के राजमहल में गयी राजा दक्ष प्रजापति की राजधानी इसी देहरादून में थी । उस काल में देहरादून का नाम देवनगरी था । यह उत्तराखंण्ड देव भूमि है। यहां देव देवागनांये ओर परियां

रहती थी । देवताओं के राजा दक्षप्रजापति थे। दक्षप्रजापति महाज्ञानी व महाविद्वान राजा थे। इनके राज्य में कोई दुखी नही था प्रजा इनको बहुत चाहती थी।

सती की तपस्या से प्रसन्न होकर सती को उनका मनचाहा वरदान देने के पश्चात भगवान शिव अपने धाम कैलाश पर्वत चले गये । कैलाश जाने के बाद शिव का सती के लिए कोई सन्देश नहीं आया। इससे सती काफी उदास रहने लगी ओर सोचने लगी कहीं भगवान शिव मुझे आश्वासन देकर भूल तो नही गये ।

काफी समय पश्चात विवाह का शुभ दिन निकलवाकर भगवान शिव ने अपने गणों को राजा दक्षप्रजापति के महल में भेजा। राजा ने गण लोगो को बहुत आदर सत्कार के साथ कुछ दिन अपने महल में रखने के पश्चात शिवधाम वापिस भेज दिया। शिवगणों ने भगवान शिव को राजमहल में राजा द्वारा दिये गये सम्मान के बारे में बताया । शिवगणो से राजा के शुभ सन्देश को सुनकर भगवान शिव शंकर बहुत प्रसन्न हुए । तब भगवान शंकर ने सभी ऋषिमुनि गण, देवगण तथा अपने गणों की विशाल रूप में बारात लेकर दक्षप्रजापति के राजमहल में पहुचे । जब सती की सहेलियों ने बारात ओर दूल्हे को देखा तो वह दंग रह गई।

दूल्हा एक बैल पर सवार नंगा धड़ंगा पूर बदन में भभूत मले हुए, गले मे सर्प लेपेटे हुए था यह देखकर सब सहेलिया सती के पास जाकर बोली सती ने कैसा वर चुन लिया है वह तो दुल्हा नही भूतों का नाथ है। हम तो उसे देखते दंग रह गयी। यही सारी बातें सती की माता–पिता को भी सुनाई। जब सती की माता दूल्हा को देखने गयी तो उन्हे साक्षात भगवान शिव के दर्शन हुए मन में सोचकर बोली ये सब सहेलियां बेकार हमको डराती है।

बारात महल के आंगन में आई तो स्वयं राजा दक्षप्रजापति ने अक्षत एवं फूलों से बारात का स्वागत किया ओर बारातियों तथा दूल्हे को आसनों पर बैठाया तथा जलपान के पश्चात बेउला को यक्ष मण्डप में लाकर सती को मिलाकर यक्ष मण्डप के फेरा और टीका कराके राजा रानी ने सती को भगवान शंकर को सौंप दिया । बारातियों को कुछ दिन अपने महल में रखने के बाद भगवान शिव और सती को बारातियों सहित विदा किया गया ।

सती के तपस्थली और भगवान शिव का चरण पड़ने के कारण ही

इस स्थान का नाम सिद्धेश्वर महादेव पड़ा है। जहाँ जहाँ भगवान शिव के चरण पड़ें वह स्थान तीर्थ के रूप में उभरा है। आजदेहरादून विश्व में प्रसिद्ध है क्योकि देहरादून एक तो देवताओं की तपस्थली, दूसरा सती की तपस्थली, तीसरा यहाँ स्वयं भगवान शिव के चरण पड़े थे जिस कारण देहरादून एक तीर्थ स्थली से जानी जाती है।

इस स्थान में भगवान शंकर के शक्ति के कारण अनेक चमत्कार देखने को ओर सुन्ने कोमिला है जेसे शिवलिंग से ओमकार के शब्द निकलना, दीवार से दूध निकलना एक साधारण गृहस्थ व्यक्ति को 21 दिन तक एक पत्थर मे खड़े रह कर तप कर ओर 40 दिन तक नीराहार निर वस्त गुफा के अन्दर रहकर तप करना फिर गुरू गौरख नाथ को प्रसन्न करने के लिये एक वर्ष तक गुफा के भीतर रह कर घोर तप करना यह सब यहा पर महा शक्ति प्रकट होने का परमाण है।

शायद आप सभी को मालूम होगा कि चारवर्ष तक यहां शिव लिंग से ॐशब्द की ध्वनि प्रकट होती रहीं । यह आवाज अप्रैल 1977 से 1980 तक लगातार आती रही ।फिर 19 अप्रैल 2007 को 4 दिन तक गर्भ गूफा की दीवारों से दूध की धारा निकलती रही ।हजारो श्रद्धालुओं से इसका दर्शन किया ।

इसी शक्ति के कारण आज भी 21 दिन तक लगातार शिवलिंग पर जल चढाने से भक्तो की मनोकामना पूर्ण होती है ।

कलिकाल के वर्तमान समय में जब समस्त विश्व नाना प्रकार के दुखों, प्राकृतिक, शारीरिक व मानसिक दुःखों की भीषण लपटों में जल रहा है। नाना प्रकार की बुराईयाँ मनुष्यों को अपने बंधन में कसती जा रही है। चा़रो और अधर्म, अनिश्चितता, घृणा, पारस्परिक द्वेष और अशान्ति का वातावरण है। ऐसे समय में प्रभु नाम का भक्तिमय प्रेम ही हम सभी को सुख–शान्ति प्रदान कर अन्ततः हमें उस परब्रह्म परमेश्वर से मिला सकता है।

युगों–युगों से धर्म के क्षय और अधर्म की वृद्धि होने पर वह महाशक्ति पुंज, दुःखहर्ता, करूणा निधि, भक्त–वत्सल प्रभु अपने भक्तों के हितार्थ स्वयं को विभिन्न स्वरूपों को प्रकट करते हैं। जैसा कि द्वापर युग में,

कृष्णावतार हुआ। कृष्ण रूप धारण कर उस ब्रह्म परमेश्वर, जगदाधार, शक्तिमान ईश्वर ने स्वयं अपने मुखारविंद से कहा कि – हे अर्जुन! जब–जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब–तब ही मैं अपने स्वरूप का सृजन करता हूँ।

साधुजनों के उद्धार तथा दुश्कर्मियों के विनाश हेतु एवं धर्म की स्थापना के लिए युग–युग में प्रकट होता हूँ।

भक्ति और शक्ति की आवश्यकता

भक्ति क्या है? इस विषय में भक्तों के विभिन्न मत हैं, किन्तु यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि भक्ति एक विशेष अनुमति मात्र है जिसको परिभाषित करना सरल नहीं है, क्योंकि अनुभूति तो केवल अनुभव से ही प्राप्त होती हे, किन्तु भक्त लोगों ने भक्ति को धारण करने वाले (भक्तों) के विषय में जो आदर्श बताया है, उसके अनुसार संक्षेप में, यही कहा जा सकत है कि अपने ईष्ट से अनन्त प्रेम हो जाना ही भक्ति है।

सब ओर से शून्य हो जाना, लौकिक और प्रलौकिक समस्त प्रकार के प्रलोभनों से यहाँ तक कि मोक्ष से भी अपनी आशक्ति हटाकर अपना समस्त संचित प्रेम अपने ईष्ट के श्री चरणों में लगा देने का हार्दिक प्रयत्न अर्थात् अपने अंतर्मन का समस्त प्रेम अपने एक मात्र प्रियतम (भगवान) को समर्पित कर देने की सच्ची भावना ही भक्ति है। भक्ति की पराकाष्ठा होने पर प्राप्त अनुभूति ही अमृत, अमृत से तृप्ति और तृप्ति से ही सिद्धि अर्थात प्रियतम की प्राप्ति है।

अनन्त भक्तों के लिए श्रीमद्‌भागवत में लिखा है कि –

"मुझ में चित्त लगाये रखने वाले मेरे प्रेमी भक्तों को मुझे छोड़कर ब्रह्म का पद, इन्द्र का आसन, चक्रवर्ती राज्य, लोक लोकान्तरों का आधिपत्य योग की सब सिद्धियां और सम्पूर्ण मोक्ष भी नहीं चाहिए।"

श्री कृष्ण भगवान ने स्वयं गीता में भी यही कहा है कि –

"जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष, न कामना करता है, जो शुभाशुभ का परित्यागी है वही भक्तिमान मनुष्य मुझे प्रिय है"।

भगवान अपने प्रति अपने भक्तों के प्रेम को प्रमाणित करने हेतु अनेकों कौतुक भी करते हैं। अनेकों प्रकार के भय व दु:ख जो बहुत थोड़े समय के ही साधुजनों के जीवन में मानों उसकी (भक्ति की) परीक्षा के लिए आते है।

दु:ख और भय जहां भक्त के प्रेम की परीक्षा लेते हैं, वही विषय और विलासित से सम्बद्ध प्रलोभन भक्त को भक्ति की राह से हटाने का प्रयत्न भी करते हैं। कुछ असमर्पित भक्त जिन्हें वास्तविक भक्त नहीं कहा जा सकता, वे राह भटक जाते हैं और ढोगियों की श्रेणी में आ जाते हैं किन्तु सच्चा भक्त अपने ईष्ट के प्रेम की डोर को पकड़ के निश्चिन्त हो, लालच की झूठी भुलभुलैयासे बचकर दु:खों, भय, विपदाओं की अग्नि में तपकर चन्दन सा होकर इन परीक्षाओं में सफल हो अन्त में परमानन्द स्वरूप परमात्मा को प्राप्त कर ही लेता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण भगवान शिव की अनन्योपासिका माँ पार्वती के रूप में आज भी विश्व में मान्य है।

माँ पार्वती को सप्त–ऋषियों ने जहां–जहां भगवान शिवके अनेकों दोष गिनाए, साथ ही महर्षि नारद की सीख मानने वालों की स्थिति को बुरा बताकर भगवान शिव के साथ जीवन निर्वाह हेतु कठिनाईयां गिनायी, पार्वती को बुरे परिणामों का भय जताया वहीं भगवान विष्णु को वर के रूप में दिलवाने का प्रलोभन भी दिया, किन्तु शिव प्रेम की साक्षात मूर्ति ने अपनी दृढ़ प्रेम तपस्या न छोड़ने का प्रमाण देते हुए कहा –

महादेव अवगुण भवन, विष्नु, सकल गुन धाम,
जेहि कर मनु रमजाहि सम, तेहि तेहि सन काम।
जनम–जनम लौ रगर हमारी,
बरऊँ सम्भू न त रहऊँ कुँवारी।

भक्ति महिमा का यह वर्णन एक संकेत मात्र है। सूर्य को दीपक दिखाना भर है, किन्तु भक्ति के रस को प्रकट कर उसे परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाले फल का उदाहरण निश्चित रूप से कलि–काल के वर्तमान समय में भक्ति की आवश्यकता को दर्शाता है और भक्त का आदर्श प्रस्तुत कर अन्य भक्तों को राह सुझाता है।

जैसा कि हम–आप सभी जानते हैं कि अनेकों युगों से भगवान ने

भक्तों के प्रेम के वशीभूत ही अपने को विभिन्न साकार रूपों के हितार्थ प्रकट किया है, चाहे वह किसी दुष्ट का अन्त करने के लिए अथवा किसी भक्त को दर्शन देने मात्र उसकी आत्मिक तुष्टि के लिए है। विभिन्न भक्तों ने न केवल भगवान के दर्शन करके मात्र अपना ही कल्याण किया वरन अपने साथ अनेकों प्राणियों का भी उद्धार किया है। ठीक ऐसा ही एक सुअवसर ईश्वर की कृपा से हमें भी प्राप्त हुआ है, जो कि भगवान महादेव स्वयं भक्त श्री लक्ष्मण जी को निमित्त बना कर सिद्धेश्वर महादेव के रूप में प्रतिष्ठित हुये हैं।

वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर यही प्रतीत हो रहा है कि श्री सिद्धेश्वर महाराज कष्ट मुक्ति और भक्तों के सब मनोरथ पूर्ण करने के लिए इसी प्रकार दर्शन व आशीर्वाद प्रदान करते रहेंगे। भविष्य हीं इनका साक्षी होगा।

भक्त और भगवान

सर्वप्रथम भगवान शंकर के परम भक्त श्री लक्ष्मण जी की जीवन यात्रा पर प्रकाश डालना आवश्यक समझा गया, जिनके ध्रुव प्रयास और भगीरथी प्रयत्न तथा अनन्य प्रेम के वशीभूत हो भूतनाथ स्वयं सिद्धेश्वर के रूप में सबका कल्याण कर रहे हैं।

सादगी, धर्म और प्रेम की साक्षात मूर्ति भक्त लक्ष्मणजी का जन्म सन, 1930 को कार्तित 4 गते, रविवार, भरणी नक्षत्र कृष्ण पक्ष की दूज़ तिथि को नेपाल के जिला दैलेख बालूवाटार खोला नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता एक बहुत ही धार्मिक एवं परोपकारी स्वभाव के व्यक्ति थे।

आपके जन्म से परिवार में तो सबको प्रसन्नता हुई ही, किन्तु सबसे अधिक प्रसन्नता इनकी माताजी को हुई क्योंकि भगत जी का जन्म एक विचित्र रहस्मय घटना के कारण हुआ था।

आपसे पूर्व आपके माता–पिता के पांच पुत्रियां व तीन पुत्र थे, किन्तु कुछ समय पूर्व ही छोटा वाला गौरवर्णीय पुत्र, जिसको कि परिवार के सभी लोग बहुत स्नेह करते थे, मात्र तीन वर्ा की अल्पायु में रोग ग्रस्त हो स्वर्ग सिधार चुका था। उसी बच्चे के दु:ख में आपकी माताजी दु:खी रहा करती थी और रोती रहती थी। दैवयोग से कुल 15–20 दिन बाद ही एक महात्मा

आपके घर आ पहुँचे। उन्होंने जब माता को रोते देखा तो कारण पूछा। उक्त दुखद घटना ज्ञात होने पर माँ को सांत्वना देते हुये कहा – माँ रो मत। आपका पुत्र आपको मित्र जायेगा। मां ने कहा–महाराज भला मरा हुआ पुत्र कैसे मिल जायेगा। तब उस दिव्य महापुरूष ने उपाय बताया कि – "रविवार की रात को 12 बजे एक मुट्टी राई लेकर जहां बच्चे को दबाया है वहां पर बो देना। 14 दिन तक पूरी तरह देखभाल करके 15वी रात को 12 बजे उखाड़ कर उसकी सब्जी बनाकर खा लोगी तो तुम्हारे गर्भ में फिर वही बालक जन्म लेगा किन्तु यह बात किसी अन्य को ज्ञात न हो। मां ने ऐसा ही किया। ईश्वर की कृपा से यह बात किसी को ज्ञात भी नहीं हुई। उसी तपस्वी के आशीर्वाद के फलस्वरूप समयानुसार आपका जन्म हुआ। किन्तु इस रहस्य कोकेवल माता जी ही जानती थी, सो वह ही सबसे अधिक प्रसन्न हुई।

आपके जन्म के साथ ही परिवार में आनन्द की एक लहर सी चल पड़ी। मां आपको गोद में उठाते हुये यही कहती थी कि– "आप मेरे काले बेटे, भगवान ने गोरे को छीन लिया और काले को दे दिया।" आप सदैव यह बात सुनते तो थे पर इसका अर्थ– नहीं समझते थे, थोड़ा सा समझदार होने पर आप एक दिन मां से पूछ बैठे कि –"मां आप ऐसा क्यों बोलती रहती हो?" बहुत हठ करने पर विवश होकर, मां ने बताया, जिससे भगवान के प्रति आपकी आस्था बढ़ी।

जब आपकी आयु 7–8 वर्ष की थी तब आप मलेरिया ग्रस्त हो गये, उस समय ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे रोगों के लिए प्रचलित पद्धति (झाड़–फूंक आदि) से आपका उपचार भी हुआ किन्तु आपकी दशा बिगड़ती गई और अन्त में आप एक दिन बिल्कुल मरणासन्न हो गये। सबने आपको मृत समझकर भूमि पर, चटाई पर लेटा दिया और शमशन ले जाने की तैयार करने लगे। इधर उसी समय आपको स्वप्नावस्था में ऐसा आभास हुआ कि – दो दानवाकार प्राणी आपको पकड़ कर एक विशाल किन्तु डरावने भवन में ले गये। भय के कारण आप चिल्ला भी न सके। भवन के मुख्य द्वार से सीढ़ियां सी चढ़कर एक विचित्र प्रकार के मंच पर बैठे एक विचित्र प्रकार के दानव जैसे व्यक्ति (जो उन परिस्थितियों में उन दोनों दानवाकार व्यक्तियों का स्वामी सा लग रहा था) के सामने ले जार खड़ा कर दिया।

भगत जी को ध्यान से देखेने के बाद वह भयंकर प्राणी अपने

भयानक स्वर में उन दोनों पर क्रोधित होकर बोला – यह किसको ले आये। यह वह व्यक्ति नहीं है।

एकाएक ही न जाने कहां से दो कुते जेसे जीव भगत जी पर झपट पड़े। उनसे बचने के लिए भगत जी पीछे हटे तो सीढ़ियों से गिर पड़े। ऐसा होते ही भगत जी की आंखें इस प्रकार खुल गई मानों नींद से उठे हों।

उठते ही आप इस स्थिति को देखकर आश्चर्य चकित रह गये। कुछ पल बाद लोगों द्वारा आपको पूरी बात ज्ञात हुई,सब प्रसन्न हो गये। (आज भी इस अलौकिक घटना के रोमांचक अनुभव को स्मरण कर भगत जी रोमांचित हो जाते हैं) भगत जी के अपने शब्दों (भगत जी कहते हैं) – "इस घटना के प्रभाव से मैं बहुत समय तक भयग्रस्त सा रहा। बाद में सांसारिक बातों का ज्ञान होने पर मैं समझ सका कि – वह यात्रा मेरी आत्मा की यमलोक यात्रा थी। मुझे ले जाने वाले दोनों व्यक्ति यमदूत व मंच पर खड़े वह आदेश देने वाले स्वयं यमराज रहे होंगे।"

पढ़ने में आपकी रूचि थी किन्तु उस समय आपके यहां आज जैसी सुविधायें (शिक्षक, पाठशालयें आदि) उपलब्ध न थी। आस–पड़ोस में जो लोग शिक्षित थे उनका ज्ञान केवल ज्योतिष तक ही सीमित था। इसके साथ ही स्वयं आपके परिवार के लोग भी आपको पढ़ाई लिखाई से अधिक आवश्यक खेती–बाड़ी करने का ज्ञान दिलवाना चाहते थे। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी आपने यथासम्भव ज्योतिष के अतिरिक्त अन्य भी अनेकों प्रकार का ज्ञान अपने अथक प्रयास से प्राप्त किया। साथ ही अपनी व्यवहार कुशलता, न्याय प्रियता के साथ अपने विशिष्ट ज्ञान व विशेष प्रेम से अपने ग्रामवासियों में एक विशेष आदरणीय स्थान प्राप्त किया।

कुछ समय सूख पूर्वक व्यतीत होने के बाद एक बार फिर एक दुःख के ऐसे भंवर में फंसे, जो प्रत्यक्ष में तो दुःख ही थी किन्तु उसी दुःख के भंवर में आपको एक ऐसा रत्न मिला, जिसके प्रकाश से आपका भक्ति मार्ग और अधिक आलोकित हो गया। हुआ यह कि गांव में जादू टोना करने वाली एक स्त्री ने आपको भोग में (अपन कार्य सिद्धि हेतु अलौकिक शक्ति को) समर्पित कर दिया, जिसके फलस्वरूप आपका शरीर धीरे–धीरे क्षीण होने लगा। हर तरह के उपचार (देशी दवाईयां, झाड़–फूंक आदि) करने के बाद भी आप स्वस्थ नहीं हो पा रहे थे। तभी एक बार फिर भगवान महादव की कृपा के

फलस्वरूप एक सिद्ध महात्मा आपके घर जा पहुंचे। आपकी माता जी ने जब भगत जी को उन महात्मा जी से दिखवाया, तो महात्मा जी ने एक कारण बताने के बाद कहा कि – आप चिन्ता न करें, यह ठीक हो जाएगा। इसकी रक्षा के लिए मैं एक शिवगण अपनी सिद्धि द्वारा अदृश्य रूप से छोड़ जाऊंगा। थोड़ी क्रियाओं को करके महात्माजी आपको अभूतपूर्व आशीर्वाद देकर चले गये। उसी दिन से आप ठीक होने लगे और थोड़े ही दिनों में पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गये।

उस स्त्री को जब यह ज्ञान हुआ कि लक्ष्मण जी को उसके पाप कर्म का ज्ञान हो गया तो उसने आपसे क्षमा मांगी। भगत जी ने अपने व्यवहार के अनुकूल अपने प्राणों की शत्रु उस पतित स्त्री को भी क्षमा कर दिया, बस उससे यही कहा कि ऐसा जीवन भर दोबारा न करें।

उस शिवगण के प्रभाव से आपने अन्य लोगों को भी अनेकों कष्टों से मुक्त किया। साथ ही आपकी भक्ति भगवान शंकर के प्रति और अधिक बढ़ गई, आपकी भक्ति और प्रेम इतना बढ़ता गया कि आज भक्त और भगवान एक ही है। इसी प्रेम के फलस्वरूप भगवान शिव आज भी भगत लक्ष्मण जी को निमित्त बनाकर सबको मनोवांछित फल और भक्ति तथा मुक्ति भी प्रदान कर रहे हैं।

भगत लक्ष्मण दास जी का आर्मी सर्विस में भगवान शिव द्वारा भक्ति वरदान प्राप्त करना

जब भगत जी की आयु 21 वर्ष की थी, तब एक बार आपके बड़े भाई सेना से छुट्टी ले कर (नेपाल) आये। वापस अपने कार्य पर जाते समय आपको भी अपने साथ भारत ले आये। उन्हीं के सहयोग से आप 25 जनवरी सन् 1952 में "आर्मी सर्विस कोर" एम.टी. में प्रवेश ले बंगलौर में ट्रेनिंग लेने गये। चार साल बाद सन् 1955 में आप अम्बाला छावनी में आकर 680 जी.टी. कम्पनी में कार्य करने लगे। 3 वर्ष बाद सन् 1958 में आप स्थानान्तरित होकर तंगधार (कश्मीर) में हाइजिन विभाग में गये। कश्मीर श्रीनगर से भगत जी के लिए स्वर्ग का मार्ग प्राप्त हुआ है।

भगत लक्ष्मण जी को स्वप्न में भगवार शंकर का दर्शन देकर भक्ति का वरदान देना

एक बार आप यूनिटों के लिए सामग्री लेने कश्मीर–श्रीनगर गये तो

वहां उत्तर में एक टापू की चोटी पर स्थित शंकराचार्य मन्दिर के विषय में जब आपने सुना, तो दर्शन करने की इच्छा हुई, किन्तु कार्य समाप्त होने तक अंधेरा हो चुका था, सोचा प्रातः दर्शन करके ही वापस तंगधार जायेंगे। यह सोचकर आप रात्रि–विश्राम के लिए विश्राम गृह में चले गये। वहीं आपको स्वप्न हुआ कि जैसे किसी व्यक्ति ने एक स्थान विशेष के बारे में आपको बताया कि वहां पर शंकर भगवान साक्षात रूप से विराजमान हैं। उनके दर्शन के लिए जब आप चले, तब दो अन्य व्यक्ति भी आपके साथ चल दिये। जब आप बताये गये स्थान पर पहुंचे, तो वहां वास्तव में शंकर भगवान के भभूत युक्त तेजस्वी शरीर, गले में रूद्राक्ष की माला, बाघम्बर लपेटे आसन लगाये स्वरूप के दर्शन हुये तो आपने जैसे ही उस अद्‌भुत स्वरूप को देखा तो गदगद हो गये। सब सुध–बुध बिखर गई, आंखों में आंसू बहने लगे। साथ के दोनों व्यक्ति दौड़कर भगवान शंकर के चरणों में जा लिपटे तब कहीं भगत जी को इस बात का ध्यान आया कि मुझे तो भगवान के चरण स्पर्श करने चाहिए थे। तभी आपने सुना भगवान शंकर उन दोनों व्यक्तियों से पूछ रहे हैं – भक्तों! क्या चाहिए? एक ने धन व दूसरे ने सोना मांगा। शंकर जी ने कहा मिल जायेगा जाओ। उनके जाने के बाद जब आपने भगवान शंकर के चरण स्पर्श किये तो शंकर जी ने पूछा कि भक्त तुम्हें क्या चाहिए? आप असमंजस में पड़कर सोचने लगे, किन्तु आनन्दकी अद्वितीय बेला में आपका ध्यान प्रयास के बाद भी बस स्वरूप से हट न सका। बरबस ही आपके मुख से निकला "भक्ति" भगवान ने आपके शीश पर अपना वरदहस्त रखते हुये कहा, "तथास्तु" ऐसा कहकर कहा मेरा आशीर्वाद है। तुम ऐसा करो आगे जाना वहां तुम्हें भक्ति मिलेगी। भगतजी आशीर्वाद एवं भक्ति के वरदान प्राप्त कर आगे गये तो वहां एक बिल्डिंग थी, उस बिल्डिंग के बरामदे में काफी लोगों का जमघट था। भगत जी शिवजी के आदेश होने के कारण सीधा आगे जाकर अन्दर चले गये इतने में कुछ लोगों ने कहा अन्दर कौन गया, इतने में एक आदमी ने भगत जी का हाथ पकड़कर बाहर को खींच लिया। दो–तीन लोगों ने उसआदमी को कहा शिव जीने भेजा है, इनको छोड़ दो, उसने भगत जी का हाथ छोड़ दिया और वे अन्दर होते ही उनकी आंख खुल गयी। आपका जहां भगवान शंकर जी के स्वरूप के बिछुड़ने का दुःख झेलना पड़ रहा था, वहीं पर एक मन यह कह रहा था कि चलो स्वयं भगवान से मुझे भक्ति का यह अनुपम वर प्राप्त हो गया, इन्हीं विचारों के उथल–पुथल के

साथ प्रातःकाल हो गया। आपकी उपस्थिति करने के बाद आप शंकराचार्य मन्दिर के दर्शन के लिए गये, सांयकाल को मन्दिर से वापस आये। दो दिन श्रीनगर में रूककर फिर वापस तंगधार पहुंच गये।

आपका जीवन एक सनत की भांति ही हो गया। आपकी इस भावना को देखते हुये यूनिट वालों ने यूनिट के एक मन्दिर की सेवा का भार आपको सौंप दिया। वह मन्दिर पिछले बहुत समय से देखभाल के अभाव में अस्त–व्यस्त हो चुका था, अपने अथक प्रयास और प्रेम से आपने उसे पुनः एक अच्छे मन्दिर की भांति प्रतिष्ठित किया। वहां रहकर आप भक्ति मार्ग पर और अधि क समय लगाने लगे।

बहुत ही नियम संयम से कार्य करते हुए आपने प्रभु का एक और चमत्कार देखा आप अपनी नियमित दिनचर्या के अनुसार प्रतिदिन प्रातः 4 बजे तक शैय्या अवश्य त्याग देते थे, तत्पश्चात स्नान आदि आवश्यक कार्यो से निवृह हो 5 बजे से पूजा अर्चना के कार्य मन्दिर में प्रारम्भ कर देते थे। एक बार आप रात्रि भर सो नहीं पाये। रात 3 बजे लगभग आपको ऐसी गहरी नींद आई कि अगर उस दिन जगाये न जाते तो शायद आप दिन बढ़ने तक सोये ही रह जाते किन्तु ठीक 4 बजे किसी ने आपका दरवाजा थपथपाते हुये आपको आवाज देकर लक्ष्मण बोल कर उठाया। आवाज सुनते ही आपकी आंख खुल गयी। सामने ही दीवार घड़ी थी। समय देखा तो 4 बजकर 5 मिनट हो चुके थे। आपको आवाज देने वाले को अपना साथी चमन लाल समझा और धन्यवाद देने के लिए जल्दी से दरवाजा खोला किन्तु बाहर कोई न था। आपने सोचा शायद चमन लाल जी आवाज देकर चले गये होंगे। आपने शीघ्रतापूर्वक नित्य कर्मो से निपट कर सदा की भांति पूर्जा अर्चना की। दिन में जब यूनिट में चमन लाल जी मिले तो उन्हें आपने समय पर उठा देने के लिए धन्यवाद कहा, तब चमन लाल जी आश्चर्य चकित होकर बोले लक्ष्मण भाई मैंने तो आपको नहीं जगाया, हां जब मैं आपके मकान के सामने से निकला तो आप सदा की तरह उठे हुये थे। तब आपने कहा कि मैं तो गहरी नींद में था, आपने मुझे नहीं जगाया तो किसने जगाया होगा। चमनलाल जी बोले भाई यहां और कोई तो (सैनिक क्षेत्र होने के कारण) जा नहीं सकता। इतनी सुबह अन्य साथी भी नहीं उठते, शायद आपका नियम भंग न हो सके सो भगवान ने आपको उठाया होगा। इस बात

को समझते ही भगत जी प्रभु की कृपा समझ जितने आनन्दित हुये वह अवर्णनीय है। इससे आपका प्रेम और विश्वास प्रभु के प्रति और अधिक बढ़ गया।

ऐसी ही एक अन्य धटना इस धटना के कुछ दिनों बाद हुई। यूनिट के कुछ भवन दो पहाड़ो के बीच एक नाले के किनारे बने हुये थे। कभी–कभी बर्फ पड़ने के समय उन पहाड़ों से पत्थर भी फिसल कर नीचे आ जाते थे। इसलियें उनमें कोई रहता न था। एकान्त में होने के कारण वह स्थान आपको पसन्द आ गया, इसलिए साथियों के मना करने पर भी आप वहीं रहने लगे। एक बार रात को लगभग 1 1 1 2 बजे आप एक पौराणिक पुस्तक पढ़ रहे थे। अचानक प्रहाड़ पर से किसी बड़े पत्थर कें फिसलने से बहुत भयानक आवाज आई। आवाज सुनकर पास में ही सुरक्षित स्थान पर रहने वाले आपके साथी हड़बड़ाकर आपको अपने पास बुलाने लगे, किन्तु आप तनिक भी घबराये नहीं बल्कि मन में यह विश्वास था कि जब भगवान मेरे साथ हैं तब भय कैसा? कहते हैं प्रभु में अटूट विश्वास हो,तो प्रभु स्वयं रक्षा करते हैं। तभी एक बड़ा पत्थर भयानक गर्जन करता हुआ बहुत वेग से, जिस दीवार के साथ आप बेठे हुये थे, उससे टकराया। सभी साथी एकदम से घबराकर दौड़ते–भागते हुये वहां पहुंचे। उन सबके आवाज देने पर जब आप बाहर निकले तब कहीं जाकर उन सबको सन्तोष हुआ। टार्च की रोशनी में जब सबने जाकर देखा तो वह एक बहुत बड़ा पत्थरथा। इतना बड़ा पत्थर जितने वगे से उस दीवार से टकराया था, उस परिस्थिति में उस दीवार का बच पाना असम्भव था। यह तो प्रत्यक्ष एक चमत्कार ही है। सबने स्थिति को देखते हुए यही कहा कि आज तो भगवान ने ही भगत जी की रक्षा की है। भगत जी तो यह सोचकर पुलकित हो गये कि भगवान ने जब मेरी रक्षा की है और मुझे भी अपने भक्तों में गिन लिया, यही सोचते हुए आपकी आंखों से प्रेमाश्रुओं की अविरल झड़ी लग गई। ऐसी घटनाओं से आपका प्रेम और विश्वास दृढ़ से दृढ़तर होता गया।

आपके साथ ही अन्य धार्मिक, आध्यात्मिक साथी जो राधास्वामी थे, वे ध्यान लगाया करते थे। आपका रूझान भी इसी ओर देखते हुये उन्होंने आपको ध्यान प्राप्त आनन्द के विषय में बताकर ध्यान लगाने हेतु उत्साहित किया। उन्हीं से प्रेरणा पा उन्हीं से सीखकर उन्हीं के सानिध्य में आपने ध्यान

लगाना आरम्भ किया, थोड़े दिन तो मन नहीं लगा, पर धीरे-धीरे जब आनन्द प्राप्त होने लगा तो आप घण्टों इसी तरह ध्यान लगाने लगे, थोड़ा अधिक अभ्यास होने पर आपने ध्यानावस्था में शरीर से बाहर भी आत्मा का आभास करने की सामर्थ्य भी प्राप्त कर ली, किन्तु ऐसी अवस्था के विषय में आपने सुन रखा था कि कभी-कभी आत्मा शरीर से बाहर होने पर वापस नहीं जा पाती सो इस प्रकार की अवस्था के प्रारम्भ होते ही आप अपना ध्यान तोड़ देते थे।

यह सत्य है बिना गुरू ज्ञान नहीं, बल्कि ज्ञान के ध्यान, बिनागुरू के आध्यात्म ध्यानावस्था में पहुंचने का ज्ञान नहीं हो सकता।

भगत जी की अमंरनाथ यात्रा

सन् 1960 में मार्गशीष महीना अक्टूबर में जबकि भयंकर सदी हो रही थी, तभी भगत जी के मन में अमरनाथ यात्रा की इच्छा हुई, सो आप10 दिन का अवकाश लेकर यात्रा पर निकल पड़े। अनन्तनाग पहुंचने पर ज्ञात हुआ कि यात्रा बन्द हो चुकी है, वहां से लोग वापस आ चुके हैं, क्योंकि बर्फ पड़ने वाली है जिससे रास्त बन्द हो जाते हैं। इतना सुनने के बाद भी आपने निश्चय कर लिया है कि अमरनाथ के दर्शन अवश्य करने हैं। यह सोचकर आप आगे चल दिये, अभी तीन दिन का रास्ता शेष था। रास्ते में जो भी लोग मिले सब वापस आते हुये ही मिले, जाता हुआ कोई न मिला। कई लोगों ने पूछा आप कहां जायेंगे। गन्तव्य स्थान ज्ञात होने पर सबने आगे न जाने की ही राय दी। अनेकों ने जब कठिनाईयों के साथ प्राण चले जाने का भी भय बताया जब आपने कहा – भैया अब तो चल ही पड़ा हूं। अगर मर भी गया तो यह सन्तोष रहेगा कि भगवान के निमित्त प्राण जायेंगे, कुछ लोग तो आपको भक्त समझते और कुछ आपको मूर्ख समझते, आप पर हंसते हुये अपनी राह चले गये। इसी प्रकार चलते-चलते शाम के समय आप त्रिवेणी पहुंचे, वहां बनी हुई धर्मशालायें सब सुनसान थी। कुछ ग्वाले अवश्य पास में ही अपने पशुओं के साथ डेरा जमाये हुये थे। सामान धर्मशाला के एक कमरे में रखकर जब आप ग्वालों से मिले तो अभिवादन आदि के बाद उन्होंने भी आपसे यही पूछा कि –तुम कहां जाता है। आपने जवाब दिया, अमरनाथ। यह

सुनते ही वह कश्मीरी ग्वाले भी आश्चर्य चकित होकर अपनी अजीब सी हिन्दी भाषा में फिर बोले – अरे भाई, तुम इस वक्त वहाँ क्यों जाता है, वहां जाकर वापस कैसे आयेगा? क्या मरना चाहता है? उनकी उस प्रेम भरी फटकार को सुनकर भगत जी को ऐसा प्रतीत हुआ मानों अपने परिवार के ही सदस्य मिल गये हो। आपने इधर–उधर की अन्य बातों में उन्हें उलझाकर उनके प्रश्नों का कोई उत्तर न दिया। रात होने तक उन्हीं ग्वालों के साथ समय बिताकर फिर धर्मशाला में रात्रि को विश्राम कियां सुबह पूजा इत्यादि कर प्रस्थान से पहले उन ग्वालों से फिर मिलें, चाय पिलाते हुये उन सबने एक बार भगत जी को फिर समझाया किन्तु आपके दृढ़ निश्चय को देखकर बहुत उदास मन और भारी आंखों से विदाई दी।

आप भगवान का नाम लेकर चल दिये। मन में यही सोच थी कि हे प्रभु! यदि आपकी कृपा होगी तो आपके दर्शन हो ही जायेंगे और यदि मर भी गया तो आपके धाम में ही मरूंगा। मौसम भी अच्छा नहीं था। बादल छाये हुये थे, हल्की–हल्की फुहारें पड़ रही थी। थोड़ी दूर चलते ही एकदम खड़ी चढ़ाई थी। 2–3 कि.मी. की चढ़ाई चढ़कर जब आप आगे बढ़े, तो भयानक कोहरा छा गया। 3–4 फिट से आगे रास्ता दिखायी देना बन्द हो गया। आपके मन में यह विचार आयाकि अब तो शायद कुछ देर तक रूकना पड़ेगा। तभी आपने एक ऐसा विलक्षण चमत्कार देखा जिसने न केवल आपको राह दिखाई वरन दर्शन अवश्य प्राप्त होने का प्रबल विश्वास भी प्रदान किया। आपने देखा कि तभी उस भयानक कोहरे के बीच एक टार्च के प्रकाश का जरिया प्रज्जवलित हुई, जिससे कि आपको बहुत आसानी से आगे 20–25 फिट तक की राह दिखाई देने लगी, प्रकाश देखते ही आपका साहस पुनः बढ़ गया और आप उसी प्रकाश के सहारे शेषनाग के उस तालाब के किनारे पहुंच गये, जिसमें छोटी–छोटी नदियां मिलती हैं। उसमें से एक पानी दूध जैसा सफेद था। यहां से पुनः चढ़ाई थी। आक्सीजन की कमी से थोड़ा सा चलते ही सांस फूलने लगती थी। बर्फ से ढके पहाड़ चांदी की तरह चमक रहे थे। भगत जी भगवान शंकर का नाम लेते चलते रहे। सायं 3–4 बजे तक लगभग आप एक पर्वत की ऊंची चोटी पर पहुंचे। जहां पर पत्थरों के अतिरिक्त कुछ पहाड़ी कौवे थे, जिनकी चोंच और पैर पीले रंग की थी और कुछ बिल्ली के आकार जितने बड़े–बड़े चूहे जिनकी आवाज ऐसी परिस्थितियों में बहुत भयानक मालूम हो रही थी। आगे ढलान रास्ता प्रारम्भ था, किन्तु

तभी बर्फ गिरनी आरम्भ हो गई। अंधेरा होने से कुछ पूर्व ही आप ऐसे स्थान पर पहुंचे जहां पर धर्मशालायें बनी हुई थी, किन्तु इस समय सब खाली पड़ी थी। आपने एक कमरे में अपने साथ लाया हुआ सामान वहीं डाल दिया। सर्दी बहुत अधिक थी, सर्दी कम करने के लिए आपने इधर–उधर ढूंढा, तो थोड़ी बहुत लकड़ियां मिली जलाने की कोशिश की लेकिन गीली होने के कारण वे जल न सकी। आपने संध्या आदिकी और फिर वहीं एक स्थान पर कम्बल लपेट कर लेट गये। लेटते ही आपको नींद आ गयी। आधी रात के लगभग जब आपकी आंख खुली तो आपको आभास हुआ कि कमरा गर्म हो रखा है। नजरें घुमाकर देखा तो एक चमत्कार देखनें में आया कि –कोने में लकड़ियां जल रहीं हैं साथ में ही पर्याप्त मात्रा में सूखी हुई लकड़ियां भी रखी हुई है। आप सोचने लगे कि यह सब किसने किया होगा? बहुत सोच विचार के बाद भी जब कुछ निष्कर्ष न निकला तो आपने इसे भी महादेव की कृपा मान उनका धन्यवाद दिया। प्रातः काल आप अपना सामान वहीं छोड़कर कम्बल लपेट कर अमरनाथ जी के दर्शन के लिए चल दिये। थोड़ी दूर आगे रास्ता एक पहाड़ी नाले से होकर जाता था जिस पर बर्फ ही बर्फ थी। बर्फ के उपर से चलकर एक डेढ़ कि.मी. चलने के बाद आपको कुछ दूरी पर अमरनाथ जी की गुफा दिखाई दी। उसे देखते ही प्रसन्नता से आपको जो थकान का आभास हो भी रहा था वह भी समाप्त हो गया। आप आनन्दपूर्वक शीघ्रता से चलने लगी तभी आपको उसी राह पर साधु वेश में एक व्यक्ति आता दिखाई दिया किन्तु आपको देखकर उसी राह से वापस हो गया। ऊ के आकार की पर्वत श्रृंखला में स्थित उस पवित्र गुफा से जब आपने प्रवेश किया तो आपको वही साधु फिर दिखाई दिया, जो आपकी प्रतीक्षा कर रहा था।

आपने साधु महाराज को प्रणाम किया। आशीवाद के पश्चात उसी महात्मा ने बताया कि मैं लकड़ी लेने जंगल में जा रहा था कि आप आते दिखाई दिये, सो मैंने सोचा – इस समय सब यात्री वापस चले गये, ऐसी भयंकर ठण्ड में कौन भगत आ रहा है? जो भी आ रहा होगा उसी सर्दी लग रही होगी इसलिए चाय दूं। यही सोचकर वापस आ गया। आसन देकर, उस महापुरूष ने आपको बैठाया, कुछ पलों के बाद वह चाय ले आया, दोनों चाय पीने लगे। साधु महाराज के विषय में उन्हीं से ज्ञान हुआ कि वे भी चार वर्ष पूर्व भ्रमण करते हुये दर्शन की अभिलाषा से नेपाल के पशुपति आश्रम से यहां

आये थे, दर्शन करने के बाद यहां की रमणीयता व भक्तिमय एकान्त स्थान देख वे यहीं पर रूक गये और तब से यहीं पर रह रहे हैं। खीने पीने के विषय आपने बताया कि रास्ता खुले होने की अवस्था में ही वे आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करके रख लेते हैं जिससे बर्फ गिरने के दिनों आवश्यकतायें पूरी हो जाती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि अनेकों महात्मा भी यहां रहने के लिए आये किन्तु यहां कि परिस्थितियों से घबरा कर चले गये, पर वह महात्मा जी वहां के एकान्त वास में रहकर आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत सन्तुष्ट थे।

साधु बाबा ने स्वयं वहां बर्फ के शिवलिंग बनने का स्थान विशेष आपको दिखाया और बताया कि रक्षा बन्धन के दिन यह चमत्कारिक शिवलिंग जब सम्पूर्ण हो जाता है तभी यहां पर मेला भी लगता है। अमरनाथ के सम्पूर्ण इतिहास के विषय में उन्होंने भगत जी से विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि किस प्रकार यहां पर भगवान शिव ने मां पार्वती को अमर कथा सुनानी आरम्भ की किन्तु वह कथा के मध्य में ही निद्रा–मग्न हो गई परन्तु कबूतर के जिस जोड़े ने यह कथा सम्पूर्ण रूप से सुनी वह कबूतरों का जोड़ा आज भी अमर कथा के प्रभाव से अमर है। इसी अद्‌भुत प्रसंग के मुख्य स्थल होने के कारण इस गुफा का नाम अमरनाथ गुफा पड़ा है। आपने भी उन अमरनाथ कबूतरों के जोड़े के दर्शन किये। इसी प्रकार अनेकों प्रसंगों परभी आपसे उस दिव्य महापुरूष का सत्संग हुआ। सायंकाल वहां से प्रसाद के साथ–साथ अभूतपूर्व सत्संग उस महापुरूष के दर्शन तथा आशीर्वाद प्राप्त किया और ऐसे विकट भयंकर मौसम में केवल अपनी श्रद्धा और प्रेम व विश्वास के आधार पर अरमनाथ जी की यात्रा का एक अनोखा इतिहास रचकर आप परम आनन्दित हृदय से वापस अपने डेरे में लौट आये।

इस यात्रा के विषय में स्वयं भगत जी का कहना है कि यदि मैं लोगों के कहने में आकर, दुविधा में पड़ कर कहीं रूक जाता, तो शायद अमरनाथ जी की यात्रा तो संभव न थी, किन्तु इतना तृप्तिपूर्ण दर्शन और ऐसा अनोखा संयोग, पूर्ण दिव्य–सत्संग के अमृत का रसपान असंभव ही था।

यह है अनन्य प्रेम और अटूट श्रद्धा और दृढ़ विश्वास का अतुलनीय प्रसाद।

भगत जी का व्यास आश्रम यात्रा और गुरू धारण करना

जब सन 1961 में आपका स्थानान्तरण अम्बाला छावनी 680 जी.टी. कम्पनी में हुआ तो आपके आपके एक अन्य साथी श्री जैमल सिंह ने आपकी धार्मिक प्रवृत्ति को देखते हुए कहा कि एक बार व्यास आश्रम के दर्शन अवश्य कीजियेगा। वहां बहुत ही आध्यात्मिक वातावरण में सत्संग होता है। आपने उन्हें धन्यवाद देते हुए कहा कि – यदि भगवान शंकर की कृपा हुई तो अवश्य जाऊंगा।

जब आप 680 जी.टी. कम्पनी, अम्बाला पहुंचे तो आपके अवकाश के 4–5 दिन शेष थे। तब आपको जैमल जी की बात याद आई। आपने सोचा कि इन 4–5 दिनों में ब्यास आश्रम के दर्शन कर आयें। आप पंजाब मेल से व्यास के लिए चल पड़े। प्रातः 7 बजे व्यास स्टेशन से उतर कर तांगे से आप 10 बजे के लगभग व्यास आश्रम पहुंचे आपने देखा एक बहुत विशाल मंच के सामने बहुत बड़े पण्डाल में लाखों की संख्या में संसार के कोने–कोने से आये भक्त बैठे हुये हैं। लाउड–स्पीकरों से कीर्तन की आवाज आ रही थी, तभी सूचना मिली कि गुरू महाराज आ रहे हैं। आप भी एक स्थान पर बैठ गये। थोड़ी ही देर में गुरू महाराज श्री चरणसिंह जी अपने ग्रन्थ पाठियों शिष्यों के साथ मंच पर आये। सबने अभिवादन किया, फिर गुरू महाराज जी ने सन्त संगियों को सम्बोधित किया। गुरू जी के दोनों और जो पाठ पढ़ाने वाले बैठे थे, उन्होंने ग्रन्थ पढ़ना आरम्भ किया। वे पाठी ग्रन्थ पढ़ते थे और गुरू महाराज जी थोड़े–थोड़ अंशों का बहुत ही सरल ढंग से अर्थ करते थे। इस प्रकार सब भक्तों ने उस महान सत्संग का 4–5 घण्टे तक आनन्द प्राप्त किया। उसके बाद गुरू महाराज जी चले गये। सभी लोग लंगर के लिए चल दिये। लंगर के बाद संसार भर से आये भक्त व्यास नदी से वहां रखी टोकरियों से रेत भरकर लाने लगे और उन्हें गढ्ढों में डालने की सेवा करने लगे। रास्ते में एक स्थान पर एक कुर्सी पर गुरू महाराज बैठे हुये थे, जिससे भक्तों को सेवाफल के उनके दर्शन का लाभ भी प्राप्त हो रहा था। दर्शन लाभ के कारण आनन्द मग्न भक्त की अपनी सामर्थ्य से अधिक सेवा करके थक नहीं रहे थे। संध्या समय फिर एक घण्टे के लिए वैसा ही अद्‌भुत सत्संग हुआ। इसी प्रकार दो दिन बीत गये। तीसरे दिन गुरू मंत्र प्राप्ति के लिए भक्तों को एक पंक्ति मे बैठा दिया सबके नाम पते लिखे गये। जब

महाराज आये तब पंक्ति में बैठे भक्त लोगों को एक–एक करके ले जाया गया। गुरूजी प्रत्येक से कुछ प्रश्न पूछते थे।

उत्तरों के आधार पर जिसे उचित समझते, उन्हें एक ओर बैठा दिया जाता अन्य को वहां के सेवक दूसरी ओर जाने के लिए कह देते, ऐसे भक्त रोते तड़फते हुये उदास होकर बाहर निकलते। कुछ देर बार आपकी बारी आ गई। भगवान शंकर का स्मरण करके.आपने गुरूजी को प्रणाम किया। कुछ प्रश्नोंत्तर के उपरान्त आपको महादेव की कृपासे योग्य उम्मीदवारों की पंक्ति में बैठने का आदेश हो गया। प्रसन्नचित हो आप बैठ गये। अन्त तक उस पंक्ति में आंधे से भी कम व्यक्ति उस पंक्ति में आ पाये। शेष निष्फल होकर उदास मन से चले गये। गुरू महाराज ने कहा कि मैंने आप लोगों को मंत्रोपदेश के योग्य जानकार आपको बैठाया है, परन्तु उससे पहले आपको कुछ नियम बताये जायेंगे, उनका पालन करना आपका कर्तव्य है। दूसरा नियम यह है कि आपको ज़ो मंत्र दिया जायेगा उसे कहीं भी लिखना नहीं है। तीसरा नियम, प्राप्त मंत्र को किसी को बताना नहीं है। चौथा नियम, अभ्यास को बढ़ाना होगा। पांचवा नियम, सम, संतोष, निर्णय और सत्संग को अपनाकर मद, मोह, लोभ, अह्ंकार को त्यागना होगा।

इस प्रकार आपको व्यास मन्दिर में सत्संग और गुरू मंत्र प्राप्त हुआ। वहां से अम्बाला जाकर अपने शेष अवकाश को समाप्त कर अपने घर (नेपाल) आ गये।

धीरे–धीरे अन्य लोगों के साथ वे लोग भी जो इनकी आलोचना करते थे, उपहास करते थे, आपके मधुर व्यवहार एवं भक्तिमय संयमित जीवन के कारण फिर आपकी ओर आकर्षित हुये। कुछ लोगों ने तो आपके कहने से मांस–मदिरा का त्याग कर दिया और स्वेच्छा से भक्ति मार्ग का अनुसरण करने लगे। बहुत से लोग आपके प्रवचनों में मस्त होकर सारी रात आपके साथ बिताते थे। इस प्रकार सारा अवकाश, सत्मार्ग पर चलने वाले लोगों के बीच बीत गया।

अवकाश समाप्त होने पर आप वापस युनिट में अम्बाला (भारत) वापस आये तो आपको मोटर गैराज का इंचार्ज बना दिया गया। आप वहीं रहने लगे। यहां पर आपको संध्या भजन, ध्यानाभ्यास के लिए पर्याप्त समय मिल जाता था, सो आपने ध्यानाभ्यास विशेष रूप से करना आरम्भ कर

दिया। 2–3 माह बाद आपकी समाधिकी अवधि 8–9 घण्टे तक बढ़ गयी।

एक बार नित्य नियमानुसार आप प्रातः 5 बजे ध्यानावस्था में बैठ गये। मन को एकाग्र कर आपने आत्मा को सच खण्ड में चढ़ा दिया। आपका शरीर बैठने की अवस्था में ही मृत सा हो गया। सुबह से जब शाम हो गयी तब लोगों ने सोचा कि कहीं भगत जी के प्राण निकल गये हो, अन्यथा इतनी देर बिना हिले–डुले कैसे बैठे रहते? तभी यहां पर यूनिट के पण्डित जी आ गये। उन्होंने सबको सारी बात समझायी और आपको न उठाने के लिए कहा। अगले दिन सायं 6 बजे आपकी समाधि टूटी। जब लोग मिले तो लोगों ने पूछा कि आप इतनी देर कैसे बैठे रहे, तो आपने उत्तर दिया। सब गुरू की कृपा है।

इसी प्रकार योग के द्वारा आपने 'आत्म ज्ञान' प्राप्त किया जिसके फलस्वरूप "वाणी" (अन्तर आत्मा में जाग्रत होना) शुरू हो गयी। आपको यह विदित था कि यह "वाणी" सदा नहीं रहेगी। अतः आप उस "वाणी" को लिखने लगे, आपकी इच्छा इस "वाणी" को पुस्तक रूप में छपवाकर जन कल्याणार्थ वितरित करने की थी। आपने पत्र द्वारा गुरू जी से परामर्श मांगा तो आदेश मिला कि अभी आपको केवल "आत्म ज्ञान" प्राप्त करना है, अभी लिखना नहीं है। आदेशानुसार आपने लिखना बन्द कर दिया।

कुछ दिनों बाद आपके गुरू जी का सत्संग अम्बाला में होना आरम्भ हुआ। उन दिनों आपके बड़े भाई साहब (जो आपके साथ रहकर धार्मिक प्रवृत्ति के हो गये थे) वे भी वहां थे। वह भी आपके साथ गुरू महाराज के सत्संग में जाने लगे। दैवयोग से आपके द्वारा लिखी गई "वाणी" की वह पुस्तिका भी उन्हीं दिनों भाई साहब के हाथ लग गई। भाई साहब उन दिनों अवकाश पर थे। अब उन्होंने शीघ्र ही नियमित रूप से सत्संग में जाना तथा दिन में दिव्य पुस्तकों का अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया। इन सबका (सत्संग और पुस्तिका का) भाई साहब पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने स्वेच्छा से वह पुस्तक छपवाकर धर्म प्रचार के लिए निःशुल्क बांटनी प्रारम्भ कर दी। दूसरी बार अवकाश मिलने पर उन्होंने उस पुस्तक को अपने गांव दैलेख (नेपाल) तथा अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों में भी बांटा। अवकाश समाप्त होने पर भगत जी, धर्मपत्नी एवं बाल बच्चों के साथ अम्बाला आ गये।

अम्बाला में ही आपकी धर्मपत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया किन्तु

तभी आपको अचानक गोवा जाने का आदेश हो गया। वहां से तीन माह बाद आप वापस अपने परिवार के पास अम्बाला आये, लेकिन परिवार के आने जाने से आपको भक्ति साधना के लिए कम समय मिलने लगा। अतः आप दिन रात प्रभु से भी मुझे इसमोह रूपी दलदल से बाहर निकालिये, जिससे मैं आपका पूर्ववत भजन आनन्द पूर्वक एकाग्र मन से कर सकूं। भगवान जब भक्त को अपनाते हैं तो राह की सारी बाधाओं को स्वयं ही हर लेते हैं। आपकी पत्नी की तबियत बच्चा होने के मात्र तीन माह बाद खराब हो गई। थोड़े दिन के इलाज के बाद डाक्टरों ने बताया कि आपकी धर्म पत्नी की बच्चेदानी में कैन्सर हो गया है। इसलिए आपरेशन हेतु आप दिल्ली ले जाइये। दिल्ली जाकर आपरेशन करवाया, उन्हें कुछ समय तक दिल्ली रहकर ही इलाज करना था। इलाज चल ही रहा था कि ऑपरेशन के तीन बाद आखिर उनका स्वर्गवास हो गया। आपके एक अन्य पुत्र भी था, किन्तु वह भी दिमागी बिमारी के बारण पागलों सा रहता था और अब भगत जी के पास 6 माह का यह छोटा सा बच्चा भी था, जिसकी देखभाल भी आपने करनी थी। विवश होकर आपने बड़े पुत्र को अनाथालय में डाल दिया, जहां पर उसकी भी 6 वर्ष की अल्पायु में मृत्यु हो गई। अब आपके परिवार में आप और आपका छोटा पुत्र ही रह गया था। आपने उसे भी अपने बड़े भाई को सौंप दिया और अपने को स्वतंत्र समझने लगे किन्तु ईश्वर की ऐसी इच्छा नहीं थी सो आपके बड़े भाई साहब जो अब सेवा निवृत्त होकर देहरादून में रहने लगे थे। वे आपको बार-बार पुर्नविवाह के लिए कहने लगे। पहले तो आप मना करते रहे, किन्तु बाद में भाई साहब की हठ बढ़ती देखकर आपने उन्हें टालने के लिए अपनी समझ से कुछ ऐसी शर्ते रख दी जो साधारणतः पूरी न हो सके। जैसे मेरी होने वाली पत्नी मांसाहारी न हो (जबकि गोरखा जाति में यह एक प्रकार का मुख्य भोजन है) और धार्मिक स्वभाव की हो। मैं विरक्त स्वभाव का हूं सो कभी भी भ्रमण के लिए अनिश्चित समय के लिए जा सकता हूं।

इस विषय में वह कोई हस्तक्षेप न करे। मेरे पुत्र को बिल्कुल उसकी मां के समान ही प्यार करे। साधारण परिस्थितियों में इन सभी शर्तो को पूरा करने वाली लड़की मिल पाना कठिन था किन्तु ईश्वर की इच्छा शायद ऐसी ही थी कि आपका पुर्नविवाह हो सो आपके भाई साहब को देहरादून के

पंडितवाड़ी के श्री नरबहादुर थापा जी की लड़की (जिसके सभी विचार और क्रियाएं भगजी के अनुकूल थी पसन्द आ गई। श्री नर बहादुर थापा जी ने भी बात चलते ही एकदम हां कर दी) क्योंकि उनकी पुत्री के लिए भी उपयुक्त सजातीय वर मिल पाना कठिन था। अब तो भगत जी के पास विवाह के अतिरिक्त कोई राह न थी, सो विवाह हो गया। दोनों प्राणी अब मन चाहा जीवन साथी पाकर बहुत प्रसन्न थे और खूब भजन–पूजन कर भगवानके प्रति समर्पित रहने लगे।

इस प्रकार भगत जी पुनः सांसारिक बंधनों में फिर बंध गये, किन्तु भगवान के प्रति अपने कर्तव्य को पूर्ण रूप से पालन करके उनकी कृपा के पात्र बने रहे। उन्हीं की कृपा का प्रताप है, जो आज एक प्रमुख भक्त के रूप में जन कल्याण कर रहे हैं।

भगत लक्ष्मण जी को सिद्धेश्वर महादेव जी का दर्शन एवं पूजन का आदेश

सेना में रहकर 21 वर्ष मां भारती की सेवा करने के बाद दिसम्बर 1973 में भगत जी सेवानिवृत्त हो गये। तब तक अपने देहरादून के धर्मपुर नामक स्थान में कुछ भूमि खरीद ली थी। जब आप भाई–भतीजों से मिलने नेपाल गये, तो नेपाल में ही कुछ व्यापार आदि करने की राय दी। आप अपनी धर्मपत्नी व बच्चों को लेने के विचार से देहरादून आये, किन्तु आपके सास–ससुर ने अपनी पुत्री को अपने से दूर न भेजने के लिए आपको किसी तरह समझा कर यहीं रोक दिया। अब आप यहीं रहने लगे। किन्तु कुछ काम न होने से आपको थोड़ी आर्थिक कठिनाई अवश्य होती थी। एक दिन केदारपुर निवासी दुर्गा बहादुर थापा ने आपको एल.एस.जी.ई.डी. (लोकल सर्विस जल इंजीनियर डिपार्टमेंट) विभाग में तीन माह के कार्य हेतु एक वाहन चालक के अस्थाई पद रिक्त होने की सूचना दी। वह स्वयं भी इस विभाग में कार्यरत थे। उन्हीं के सहयोग से आपकी नियुक्ति इसी पद के लिए 14, फरवरी 1975 में हो गई। आप विभाग अधिशासी अभियन्ता को लेकर ऋषिकेश के कुम्भ मेले में चले गये। तीन माह तक वहीं रहकर कार्य किया। जब आप वापस देहरादून आये, तो आपको आदेश हुआ कि वाहन (जीप) पौड़ी छोड़ना होगा और अगर कार्य करना है तो वहीं रहना होगा, परन्तु तभी देहरादून डिवीजन के लिए एक अन्य जीप आ गयी और उसको उसी जीप

को चलाने का भार सौंप दिया गया। उस समय आपको मासिक वेतन रूपये 200/– मिलते थे आपकी इस कठिनाई का आभास एक विभागीय साथी श्री करन बहादुर थापा जी को भी था क्योंकि इन दोनों के संबंध बहुत घनिष्ठ थे। उन्होंने आपको वर्तमान मंदिर के समीप की भूमि खेती करने के लिए बटाई पर (आधा भाग भूमि के स्वामी तथा आधा भाग खेती करने वाले के आधार पर) दिलवा दी। अब वे खेती के लिए वहां जाने लगे।

एक दिन आप बटाई वाली भूमि पर खेती का कार्य आरम्भ करने के विचार से अपने मित्र श्री करन बहादुर जी के साथ जा रहे थे। भूमि के पास जैसे ही आप दोनों पहुंचे, एकाएक एक सांप दिखाई दिया। आप एकदम रूक गये। सांप चला गया तब श्री करन बहादुर ने भगत जी से कहा कि – यह सांप इसी स्थान से अनेक व्यक्तियों को अनेकों बार दिखा है, किन्तु आज तक इसने किसी को काटा नहीं। कुछ व्यक्तियों को तो यहां एक श्वेत वस्त्रधारी साधुबाबा के भी दर्शन हुये हैं। हो सकता है कि यह कोई देव स्थान हो। आप भी भक्ति पूजा वाले व्यक्ति है, सम्भव है क यह सांप भीं आपको इसी कारण दिखा हो। अतः मेरा मन यह कहता है कि यदि आप यहीं पर कुछ पूजन करके कार्य आरम्भ करें, तो हमें बहुत अच्छे फल की प्राप्ति होगी। सुझाव आपको बहुत सुन्दर लगा, सो अगले रविवार को आप दोनों मित्रों ने प्रेम और भक्ति के साथ पूजन किया और हर रविवार को पूजन करने का संकल्प भी किया, परन्तु आपको फिर अपनी नौकरी के कारण दूर देहरादून जाना पड़ा, इसलिए आप पुनः वहां पूजन नहीं कर पाये। उधर आप नौकरी पर थे, इधर आपके मित्र श्री करण बहादुर जी की देखरेख में आपके आने तक फसल पक चुकी थी। बटाई का काम भी आपके मित्र ने ही पूरा करवाकर आपका हिस्सा धर्मपुर में आपके घर पहुंचा दिया। सो आप देहरादून आने के बाद भी वहां रविवार को पूजन करना भूल गये, किन्तु इतिहास साक्षी है कि सच्चे भक्तों पर जो कठिनाईयां, दुःख ओर उनकी गलतियां जो प्रत्यक्ष में उन्हें और हमें इन्हीं रूपों में दिखाई देती हैं, परन्तु उन सबके पीछे भी उसी सर्वशक्तिमान की ही माया होती है और इसका अन्त भी वह मायापति अनेकों प्रहार के चमत्मार पूर्ण कौतुक कर अन्ततः भक्त और भक्तों के हितार्थ ही करते हैं। भगत श्री लक्ष्मण जी की उक्त भूमि भी एक ऐसी ही विचित्र चमत्कार पूर्ण विशेष रूप से जन कल्याण करने वाली ऐतिहासिक घटना की जन्मदात्री सिद्ध हुई।

दिनांक 26 दिसम्बर, 1975 को रात्रि में भगत जी को एक विशेष स्वप्न हुआ। स्वप्न में भगत जी को दिखाई दिया कि एक स्थान पर विशेष में एक पेड़ के नीचे झाड़ियों और पत्तों का ढेर लगा हुआ है, आपने उन सबको साफ करके वहां पर खुदाई आरम्भ कर दी। थोड़ी सी मिट्टी हटाते ही आपकी कुदाल किसी पत्थर से टकरा गई। आपने मिट्टी हटाकर देखा तो हाथी के पांव के आकार का एक शिवलिंग आपको दिखाई दिया। आपको अहसास हुआ कि मेरी कुदाल से तो इस पर चोट भी लग गई। यह सोचते हुए आप उसे सहलाने लगे, तभी उस शिवलिंग का आकार बढ़ने लगा और बढ़ते-बढ़ते लगभग 3 फिट का हो गया। उसमें एक महात्मा जी प्रकट हुये और भगत जी को बोले, "देखो, यदि अपना कल्याण चाहते हो, तो मेरी पूजा करो, अन्यथा तुम्हारा आने वाला समय बहुत कठिन है।" इतना कहकर वह महात्मा पुनः उस शिवलिंग में विलीन हो गये, साथ ही आपकी आंख भी खुल गयी। आप सोचने लगे कि यह कैसा विचित्र स्वप्न था। तभी आपको बटाई वाली भूमि पर पूजन के समय किया गया संकल्प ध्यान आया। आपको लगा -ओह! मैंने उस दिन के बाद संकल्प के अनुसार पुनः पूजन नहीं किया, इसलिए भगवान शंकर ने चेतावनी देकर मुझे आने वाली विपत्ति से सावधान किया है ओर साथ ही मेरी रक्षा के लिए इस विशेष स्थान पर पूजन का आदेश दिया है। सारा दिन आप उस स्वन में दिखे हुये स्थान के विषय में सोचते रहे किन्तु वैसे पेड़ वाला स्थान आपकी समझ में नहीं आया। हारकर रात्रि में सोते समय आपने भगवान से प्रार्थना करते हुये कहा -

हे प्रभु! भूल और विवशतावश हुये मेरे अपराध को क्षमा करो। प्रभु आपने पूजन के लिए आदेश दिया था। प्रभु मैं आपका पूजन अवश्य करूंगा, परन्तु कृपा करके मुझे उस स्थान का कुछ पता तो बताइये कि वह स्थान कहां है?

इस प्रकार की प्रार्थना उस प्रभु से करके आप सो गये। रात्रि के अन्तिम प्रहर में फिर आपको स्वप्न हुआ। आपने देखा कि आपके घर के पूर्वी स्थान की ओर से एक महात्मा जी आ रहे हैं, जिनकी सफेद दाढ़ी है। वस्त्र भी सफेद धारण कर रखे हैं। गले में रूद्राक्ष की माला और हाथ में डण्डा है। वह महात्मा जी आपके घर के आंगन में आकर खड़े हो गये। आपने उन्हें प्रणाम किया। महात्मा जी बोले," पुत्र ध्यान से सुनो। यहां से तीन मील दक्षिण

दिशा में जाकर खोजो वहीं पर तुमको वांछित स्थान व शिवलिंग प्राप्त होगा। वहीं पर तुम्हें पूजन करना है। तुम ही नहीं वरन् जो कोई उस स्थान में 21 दिन तक नियमित रूप से पूजन करेगा उसकी समस्त मनोकामनायें पूर्ण होगी।" यह कहकर वह महात्मा जिधर से आये थे, उधर को ही चले गये। जब आपकी आंखे खुली, तो आपके मन में आया कि अवश्य ही मेरी प्रार्थना को सुनकर स्वयं शंकर भगवान ने ही मुझे वांछित स्थान का संकेत दिया है। यह सोचते ही आप गद्गद हो गये।

आप दक्षिण की दिशा में वह स्थान ढूंढने जाने ही वाले थे कि तभी आपके मित्र श्री करन बहादुर जी आ गये। जब आपने उनसे बताया कि, गत वर्ष खेती आरम्भ करने से पूर्व जब हमने पूजन किया था तो कहा था कि हम प्रत्येक सप्ताह वहां पूजन करेंगे, परन्तु परिस्थितियों के अधीन हम ऐसा नहीं कर पाये, इसलिए मुझे दो दिन से इस प्रकार के स्वप्न दिखाई दिये हैं और आदेश हुआ कि यहां से तीन मील दक्षिण में एक पेड़ की जड़ में इस प्रकार के शिवलिंग की पूजा करनी है। अतः मुझे वहीं जाकर खोज करनी है। यह सुनते ही वह भी चौंक पड़े और बोले, अरे भाई वास्तव में मैं भी भूल गया था। वह बटाई वाली भूमि भी तो यहां से लगभग तीन मील दक्षिण में ही है, ऐसा है कि आज शाम को कार्यालय से आकर हम दोनों ही वहां चलकर ढूंढेंगे।

सांयकाल भगत जी करन बहादुर जी के साथ के केदारपुर नामक उसी स्थान पर पहुंचे, जहां आपने पिछले वर्ष पूजन किया था। पास में ही भगत जी द्वारा ली गई बटाई पर भूमि थी। दोनों मित्र झाड़ियों को काटते हुए प्रत्येक पेड़ की जड़ में शिवलिंग खोजने लगे। एक जामुन के पेड़ की जड़ के आसपास की झाड़ियों को जैसे ही करन बहादुर जी ने हटाया, भगत जी ने देखा कि पेड़ की जड़ में स्वप्न में देखे हुये दृश्य के अनुसार ही एक जुड़वा शिवलिंग वहां रखा हुआ था। आपने वृक्ष की ओर ध्यान दिया तो वह भी बिल्कुल स्वप्न में दिखाई दिये हुये वृक्ष जैसा ही लगा। आप तो प्रसन्नता पूर्वक धूल से सटे हुये उस शिवलिंग से लिपटकर भाव-विभोर होकर पागलों की भांति नाच पड़े। आंखों से बहती हुई आंसुओं की वह पवित्र धारा महादेव के उस अद्भुत शिवलिंग को मानों अपनी प्रेम गंगा से स्नान करवा रही थी।

कलिकाल के इस निस्वार्थ भागीरथ के अन्तःकरण से निकली नयनों से होकर आने वाली इस प्रेम गंगा को अपने शीश पर धारण करने

के लिए ही गंगाधर महादेव ने मानों इस कलियुग में पुनः सिद्धेश्वर महादेव ने मानों धूलयुक्त शरीर धारण कर यह लीला दिखाई हो जिससे कि आने वाले समय में अनेकों भक्त श्री सिद्धेश्वर महादेव के दर्शन कर भव–बंधनों से मुक्त हो सकें।

इसी प्रकार बहुत मग्न रहने के बाद भगत जी अपने मित्र के साथ अंधेरा होने पर वहां से परमानन्दित होते हुये वापस चले गये।

अगले दिन शायद रविवार या अन्य कोई अवकाश का दिन सवेरे ही पुनः उसी स्थान पर पहुंचे और आस–पास की झाड़–झंकाड़ मनोयोग से साफ करने लगे। स्थान के विषय में बताते हुए भगत जी के मित्र श्री करन सिंह जी ने भगत जी को बताया कि वह स्थान कभी बन्जारावाला का चाय बगीचा था, जो कि अजबपुर पंचायत में ग्राम केदारपुर में हदबन्दी में था। दोनों मित्र बातें भी कर रहे थे साथ ही आसपास की जगह से झाड़ियां आदि भी हटा रहे थे।

इसी प्रकार पास में ही झाड़ियों के बीच में एक बम्बी दिखाई दी। दोनों मित्रों ने उस बाम्बी के चारों ओर से भी सफाई कर दी। बाम्बी लगभग सात फुट ऊँची और लगभग पांच फुट की गोलाई लिये हुइ थी। आपने उसके उत्तर–पूरब की ओर थोड़ा सा खोदा तो वह एक गुफा की तरह हो गई। उस गुफा के भीतर जुड़वा शिवलिंग प्राप्त हुआ। उस शिवलिंग को ऐसे ही छोड़कर दोनों मित्र वापस चले आये। घर आकर आप दोनों ने आसपास के कुछ लोगों को शिवलिंग प्राप्त होने की शुभ सूचना दी। अगले दिन गांव के ही दो अन्य आदमियों को साथ ले जाकर आपने कुछ ईटों से उस गुफा का मुंह अस्थाई रूप से बन्द कर दिया और फिर 4 फरवरी 1976 को रविवार के दिन आपने टिहरी के निवासी ग्राम पनियाला के पंडित श्री दयाराम पैन्यूली जी के द्वारा पूजन करवाकर स्वयं अपने हाथों से भगत जी ने गौरी शंकर के रूप में पूजन किया। इस अद्वितीय शिवलिंग को उसी गुफा में प्रतिष्ठित कर दिया गया और इस महामहिम शिवलिंग को गौरी–शंकर शिवलिंग के रूप में प्राण–प्रतिष्ठा कर पूजन को सम्पन्न किया गया। कहते हैं कि इससे पूर्व यहां सर्पो का बहुत भय रहता था, किन्तु तब से अब तक इस प्रकार कोई भय नहीं है। इस घटना को सुनकर दर्शन के लिए दूर–दूर के लोग पहुचने लगे। गांव के लोगों ने श्रम–दान कर इस स्थान को लोगों के लिए बैठने योग्य बना दिया।

उसी दिन से यहां स्वयं भगत जी और ग्राम के अनेकों श्रद्धालुजन पूजा–अर्चना करने लगे। धीरे–धीरे सभी ग्रामवासियों ने यहां तन–मन–धन से सेवा कर इस स्थान को पवित्र तीर्थ स्थान बना दिया। आने वाले समय में महादेव की कृपा से हो सकता है कि यह स्थान भारत में ही नहीं, वरन् समस्त विश्व में एक तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित हो। सैकड़ों, हजारों ही नहीं बल्कि लाखों–करोड़ों भक्तों की भक्ति–मुक्ति का दाता सिद्धपीठ होगा।

भगवान शंकर जी के आदेशानुसार भगत जी की महामू पर्वत (नेपाल) की यात्रा

भगत श्री लक्ष्मण एवं उनके मित्र श्री करन बहादुर जी के अथक प्रेम से खोज व संवारे हुये बस्ती में बने हुये विचित्र मन्दिर व उसमें स्थापित विशेष शिवलिंग धीरे–धीरे जन साधारण में चर्चा का विषय बनने लगे। श्रद्धालुजनों की संख्या भी बढ़ने लगी। इस बात को देखते हुए भगत जी को यहां पक्के मन्दिर की आवश्कता प्रतीत हुई। भगत जी के मन में यह (मन्दिर बनवाने का) विचार आ तो गया, किन्तु आप आर्थिक रूप से इतने सुदृढ़ न थे, जो अपने इस विचार को कार्य रूप में परिणत कर सकते। पहले तो आपने इस विषय में चन्दा आदि मांगना उचित न समझा, किन्तु बाद में कुछ धनाढ्य–श्रद्धालुओं के आश्वासन व समझाने पर कि इस प्रकार के कार्यों में चन्दा लेकर, कार्य करवाकर तो आप अन्य भक्तों (चंदा देने वालों) को भी पुण्य कमाने का सुअवसर प्रदान करेंगे, आपने इसी प्रकार धन संग्रह करने का विचार बनाया ही था कि तभी आपने सुना कि कोई ठग इसी प्रकार चन्दा एकत्रित कर भाग गया। उसी के विषय में किसी ने व्यंग्य करते हुये कहा कि – भगवान के भक्त तो ऐसे ही होते हैं। यह बात सुनते ही आपका दिल टूट गया। आपने चन्दा मांगने का विचार त्याग दिया, किन्तु मंदिर बनवाने की चिन्ता आपके दिल में होने लगी। आप दिन रात इसी सोच में रहते कि मन्दिर कैसे बनेगा। हारकर आपने प्रभु से प्रार्थना की कि हे प्रभु! आप ही इस विषय पर मुझे राह सुझाओ। सच्चे भक्त की प्रार्थना प्रभु ने स्वीकार की और सम्वत् 2032 फाल्गुन कृष्ण पक्ष शिव चर्तुदशी को आपने स्वप्न देखा कि पुनः वही महात्मा

जी जिन्होंने स्वप्न में शिवलिंग प्राप्ति के स्थान के विषय में संकेत दिया था, पहले के समान ही वेश में आपके घर में आये और बोले भक्त, क्यों चिन्ता करते हो? मन्दिर के विषय में बिल्कुल चिन्ता मत करो, धीरे–धीरे सब कुछ हो जायेगा, जो कुछ भी कार्य होगा वह सब मेरी इच्छा और आदेश से होगा। भगत जी बोले, प्रभु! मेरे लिए क्या आज्ञा है? आदेश हुआ कि भगवान शंकर, नेपाल के जुमला महामू पर्वत में प्रकट हैं। उनके दर्शन करने जाओं, वहीं पर तुम्हें तीन वस्तुएं प्राप्त होंगी, उन्हें लाकर उन्हें इसी स्थान में भूमि से पांच फिट ऊपर स्थापना करना और सवा मन का घण्टा पांच तांबे का नगाड़ा चढ़ाना। देखना फिर मैं कई चमत्कार दिखाऊगां। इतना कहकर दिव्य महात्मा स्वप्न में ही अर्न्तधान हो गये। साथ ही आपकी आंखे खुल गयी। आपको इस बात की चिन्ता हो गयी कि नेपाल में महामू पर्वत पर कैसे जाऊं?

इसी चिन्ता में तीन–चार दिन निकल गये, अन्त में आपने अपनी समस्या को ले. कर्नल शिवराम थापा जी को बताया जो कि उस समय मन्दिर समिति के अध्यक्ष भी थें। उन्हीं की सलाह के अनुसार भगत जी अवकाश लेकर 11 अप्रैल, 1977 (बैशाख शुक्ल पख द्वादशी, दिन रविवार) को अपने भाई श्री रंघुवीर सिंह जी के साथ इस महान यात्रा पर निकल पड़े। नेपाल गंज तक रेलगाड़ी व एक दिन बस यात्रा के उपरान्त पैदल चलकर चौथे दिन आप दोनों व्यक्ति महामू पर्वत के निकट पहुंचे। रास्तें में अनेकों व्यक्तियों ने बताया कि इस समय वहां नहीं जा सकते। वहां पर केवल सावन माह की पूर्णिमा (रक्षाबन्धन) के अतिरिक्त अन्य कसी भी समय में कोई भी व्यक्ति वहां नहीं जा सकता। सो आपका जाना इस समय व्यर्थ है। हठ करके यदि आप चल भी देंगे तो भी आप वहां तक पहुंच नहीं पायेंगे क्योंकि इससे पूर्व भी जिन व्यक्तियों ने ऐसा प्रयास किया वह या तो राह ही में भटक गये या दृष्टिहीन हो गये, परन्तु आपने सोचा कि जब भगवान ने स्वयं ही मुझे यहां पहुंचने का आदेश दिया है तो मुझे वहां तक क्यों नहीं पहुंचायेंगे, सो आप अपने भाई साहब के साथ चलकर जैसे ही महामू पर्वत के बिल्कुल समीप पहुंचे तभी बर्फ ने पूरे पहाड़ को ढक लिया जिसे देखकर आपके भाई साहब ने भी कहा कि अब तो हम सचमुच ही नहीं पहुंच सकते क्योंकि आगे तो मार्ग बिल्कुल बन्द हो गया है। तो आपने उत्तर दिया कि जब हम पहुंचने के लिए

चले हैं, तो पहुंचेंगे, चाहे शरीर न पहुंचे, आत्मा तो पहुंचेगी। यह कहकर आप दृढ़ प्रतिज्ञ हो आगे चल दिये। थोड़ी दूर आगे जाने पर आपको एक व्यक्ति अपनी ओर आता दिखाई दिया।

एक बड़े पीपल के वृक्ष के नीचे बने हुए चबूतरे के पास पहुंचे, तो महात्मा वेश में उन्हें महापुरूष के मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे गेरूवे वस्त्र धारण किये हुए एक तेजस्वी दिव्य पुरूष थे। उन्होंने आपसे पूछा कि आप लोग कहां से आ रहे हो और कहां जा रहे हो? आपने अपने आने का स्थान बताने के बाद बतायाकि हम लोग भगवान शिव के दर्शन करने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि, "भक्तों आप लोग समय पर नहीं आये, इस समय आपको दर्शन नहीं हो जायेगा। दर्शन केवल रक्षा बन्धन के दिन ही होता है।" साहस कर भगत जी ने कहा – प्रभु! ऐसा क्यों होता है? कृपा करके यह वृतान्त हमें बताइये।

महात्मा जी बोलो – "आप लोग पहले यह बताइये कि इस समय आपके मन में शिव दर्शन की बात कैसे आई।" उनके प्रश्न का उत्तर देते हुए भगत जी ने अपने स्वप्न के विषय में महात्मा जी को विस्तार से बताया। तब उन दिव्य महापुरूष ने मुस्कुराते हुये कहा – "अच्छा तो तुम्हें दर्शन हो जायेगा, परन्तु आपकी धार्मिक जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण मैं तुम्हें इस महामू पर्वत का इतिहास सुनाता हूं, ध्यानपूर्वक सुनो।" इतना कहकर महात्मा जी ने बताना आरम्भ किया और कहा कि, जहां पर आप लोग खड़े हैं इस स्थान का नाम दैलेख है। इसके उत्तर में छाम नदी बह रही है। दैलेख नाम के विषय में उन्होंने बताया कि द्वापर युग में छाम नदी में यहां पर एक बहुत भयंकर अजगर था जो बहुत अधिक जहरीला था। इतना जहरीला कि वह जिस ओर भी मुंह करता उसी ओर के सभी जीव–जन्तुओं को भस्म कर देता। उसी के भय के कारण इस स्थान पर रहने वाले चन्द मनुष्यों ने अपने रहने के स्थान को पत्थर या अन्य किसी प्रकार की आड़ से दरवाजे की तरह प्रयोग करके सुरक्षित कर रखा था। दरवाजे को नेपाली भाषा में दैलो कहते हैं। दैलो बन्द होने के कारण इस स्थान का नाम दैलेख हो गया।

द्वापर युग में जब पांचों पाण्डव यहां पर आये तो उसी जहरीले अजगर ने अर्जुन को स्वप्न में बताया कि मैं छाम नदी में अजगर की योनि

में हूं और मेरी मुक्ति तुम्हारे हाथों से बाण लगने के पश्चात् होगी। आप कृपा करके मुझे मारकर मेरे शरीर के पांच टुकड़े करके पांच स्थानों पर फिंकवा दीजिए। कहते हैं कि अर्जुन ने उस अजगर की प्रार्थना पर ऐसा ही किया और उस भयंकर विशाल अजगर से सिर, धड़, नाभि और दुम तथा शेष बची हुई बारीक धूल को पांच स्थानों पर भीम द्वारा फिंकवा दिया। जहां पर अजगर का सिर गिरा वह स्थान सीरिस्थान वहां पर ज्वाला प्रकट हुइ, जहां धड़ (कोठार) गिरा वह स्थान कोटिला, जहां पर नाभि वाला हिस्सा गिरा वह स्थान नाभिस्थान और जहां दुम गिरी वह दुमेश्वर तथा जहां बची हुई धूल गिरी वह स्थान धूलेश्वर कहलाया। इन पांचों स्थानों को पंचकोशी तीर्थ कहते है । जो कोई व्यक्ति इस पंचकोशी के दर्शन करेगा उनको मुक्ति प्राप्त होगी। इसी देव भूमि के ग्राम भूर्ति में एक बार एक आश्चर्यजनक घटना हुई। भूर्ति ग्राम में सदैव फसल बहुत अच्छी होती थी। एक बार तो धान की फसल (घटना के समय) इतनी अधिक हुई कि देखकर ही लोगों की भूख मिट जाती थी। यानि तृप्ति हो जाती थी। किसान बहुत प्रसन्न हो गये। किन्तु एक दिन सुबह जब सब लोग अपने अपने खेतों में पहुंचे तो वहां सारी फसल गिरी हुई थी और बहुत सी फसल जानवरों द्वारा खाई हुई लग रही थी। सभी लोग असमंजस में पड़ गये क्योंकि सभी के पशु हमेशा ही भांति बंधे हुये थे। तब लोगों ने विचार किया कि रात खेती की रखवाली की जाये तभी फसल को, जो खाने वाले जानवार हैं, उसके स्वामी का पता चलेगा।

रात को चौकसी के लिए चार व्यक्ति नियुक्त किये गये। रात को वह चारों व्यक्ति देखभाल कर रहे थे तभी 12–1 बजे एक बहुत तकड़ा लम्बा चौड़ा झोटा (भैंसा) खेतों में घुसकर फसल को हानि पहुंचाने लगा। उन व्यक्तियों ने उसे पहचाना चाहा कि यह किसका झोटा है, किन्तु वह पहचान नहीं पाये। तभी वह झोटा खेतों से निकलकर सीधा पर्वतों की ओर चल दिया। उन व्यक्तियों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। दो–तीन घण्टें निरन्तर चलने के बाद महामू पर्वत की चोटी के पास एक समतल से रमणीय स्थान पर पहुंचकर वह झोटा एकदम अदृश्य हो गया। आसपास देखने पर उन्हें झोटा तो नहीं दिखाई दिया किन्तु वहां पर पशुओं के खाने योग्य घास आदि बहुत थी। उन्होंने यह सोचा कि अब तो अपने जानवरों को चराने यहीं लाया करेंगे।

धीरे–धीरे ऐसा ही होने लगा। पशुओं को लेकर आनेवाले चरवाहों में एक गूंगा लड़का था। उसको पशुओं के मालिक ने पशु चराने के लिए ग्वाले के रूप में रखा हुआ था। वह भी इन्हीं पर्वतों में जानवर चराने आया करता था। यहां आकर वह सभी गाय–भैंसों को चरने के लिए छोड़करस्वयं एक बड़े पत्थर पर बैठकर निश्चिन्तता से उन सभी जानवरों को देखता रहता था। उस पत्थर पर एक गढ़ढा बना हुआ था। खेलते–खेलते उस गूंगे चरवाहे के मन में आया कि इस गढ़ढे में दूध डाल दूं। अगले दिन जब वह जानवरों को चराने गया तो थोड़ा सा दूध भी अपने साथ लेकर गया। उस दूध को उस लड़के ने पत्थर पर बने गढ़ढे में डाल दिया। गढ़ढा पूरा भर गया। उस गूंगे लड़के को बहुत आनन्द आया। तब से उसका यह प्रतिदिन का नियम ही हो गया। इसी प्रकार बहुत समय गुजर गया। जब श्राण मास की पूर्णिमा (रक्षा बन्धन) आई तो उस दिन भी उस गूंगे ग्वाले ने प्रतिदिन के नियम के अनुसार उस गढ़ढे में दूध डाला, किन्तु उस दिन गढ़ढा दूध से भरा नहीं। उसने एक अन्य गाय का दूध निकाल कर गढ़ढे में डाल दिया, गढ़ढा फिर भी नहीं भरा। अन्त में उसने अन्तिम गाय का दूध भी निकाल कर गढ़ढे में डाल दिया, फिर भी गढ़ढा नही भरा तो वह क्रोध में आकर बोला क्यों नहीं भरता? कहते हैं कि भगवान शंकर की कृपा से इन शब्दों को बोलते ही उस गूंगे ब्राह्मण ग्वाले को वाणी प्राप्त हुई, साथ ही उसे भगवान शंकर और माँ पार्वती के दर्शन भी हुये। दर्शन होते ही कुछ समय पूर्व का अनपढ़ गंवार और गूंगा ग्वाला वाणीयुक्त और ब्रह्मज्ञानी हो गया। वेद मंत्रों से उस ग्वाले ने शिव पार्वती की नियमानुसार स्तुति की। अति आनन्दित ह्रदय से हर्षित होकर उस ग्वाले ने सोचा सब साथियों को बुला लें, ताकि वे लोग भी भगवान का दर्शन कर लें। वह ग्वाला अपने साथियों को बताने गया। उसने सबको शिव–पार्वती के दर्शन करने के लिए चलने को कहा। वैसे तो साधारण परिस्थितियों में इस बात पर कोई विश्वास नहीं करता, परन्तु गूंगे को बोलता हुआ देखकर उन्हें किसी न कसी विचित्र घटना के घटित होने का विश्वास सबको हो गया। कुछ लोग तो केवल कुछ विचित्रता देखने तथा कुछ आस्तिक और श्रद्धालुजन विश्वासपूर्वक उस ग्वाले के साथ चल दिये।

वहां पहुंचने पर शिव–पार्वती के दर्शन तो उन लोगों को नहीं हुये,

किन्तु एक विशालकाय (लगभग 6–6 फुट का) शिवलिंग उस पत्थर पर खड़ा था, उस ग्वाले ने आराधना की कि – "हे शंकर जी! आप कहां गये? आपने पत्थर खड़ा करके छोड़ दिया"। तब आकाशवाणी हुई कि "तुम लोग इसी शिवलिंग को पूजो, मैं इसी में हूँ। इस शिवलिंग के दर्शन व पूजन से सबकी मनोकामनायें पूर्ण होंगी।"

तभी से वहां (उसी जगह) पर उस शिवलिंग का पूजन होने लगा। कहते हैं कि कुछ गंदे और अशुद्ध विचारों के लोग भी वहां समय–असमय जाते ह रहते थे। इसलिए एक बार आकाशवाणी हुई कि – "यहां पर शिवलिंग पूजन वर्ष में केवल एक ही श्रावण पूर्णिमा के दिन ही होगा। इस दिन के अतिरिक्त यहां पूजन नहीं होगा।" कहते हैं कि आकाशवाणी के द्वारा बताने के बाद भी कुछ लोग पूजा करने के लिए चले तो उस स्थान पर या तो पहुंच ही न सके या अन्धे हो गये। तब से वहां "रक्षा बन्धन" के दिन लोग पूजन के लिये जाते हैं।

इतना कहकर उन्हीं महात्मा जी ने उस स्थान पर जाने का सारा मार्ग भगत जी को इस चेतावनी के साथ बता दिया कि वह इस मार्ग को किसी अन्य से कोई चर्चा न करें। इतना कहकर वह महात्मा जी एक पगडंडी की ओर चल दिये, चलते हुए कुछ दूर तक तो वह भगत जी को दिखायं दिये, परन्तु फिर इस प्रकार से एकाएक अदृश्य हो गये, मानों वहां कभी थे ही नहीं। उसके बाद आपने आगे चलकर वहां पर रात्रि विश्राम किया। प्रातः काल नित्य कार्यों से निवृत होकर भगत जी अपने भाई के साथ महात्मा जी के द्वारा बताये गये मार्ग पर चल दिये। चलते समय अपने मन ही मन में यह प्रण कर लिया कि – "अब तो शिवलिंग के दर्शन करने के बाद ही अन्न ग्रहण करूंगा।" दोनों भाई साथ–साथ चल दिये, किन्तु थोड़ी देर बाद भगत जी को ऐसा आभास हुआ कि जैसे उनका शरीर हल्का हो रहा हो, अन्त में तो उन्हें लगा कि पहाड़ों की चढ़ाईयों पर वह चल ही नहीं रहे, वरन् उड़ रहे हैं।

इस प्रकार आप अपनी ही धुन में भाई साहब से बहुत आगे निकल गये आगे। घना कोहरा छाया हुआ था। आप एक पल के लिए ठिठके, पुनः भगवान का स्मरण किया और मन में विचार किया कि चाहे ऐसे में ही आगे

क्यों न जाना पड़े, जाऊंगा अवश्य। यह सोचकर जैसे ही आपने दृढ़ प्रतिज्ञा की वैसे ही एक दो– कदम बढ़ाने के बाद बहुत तेज हवा चल पड़ी। जिससे आपको मार्ग दिखाई देने लायक प्रकाश हो गया। आप इसे भगवान की कृपा मानकर प्रसन्न मन से आगे बढ़ने लगे। कुछ दूर चलने पर आपने जैसे ही शिवलिंग वाले स्थान की ओर (पूर्व की ओर) देखा तो उस (बताये गये) पत्थर पर देखा कि– जिन महात्मा जी ने कल आपको मार्ग बताया था, वही महात्मा जी स्वयं खड़े हैं। उन्हें देखते ही आप समझ गये कि भगवान् शंकर ने स्वयं ही महात्मा जी का वेश धारण करके आपको पहले यहां पहुंचने का मार्ग बताया और अब पुनः साक्षात् अपने दर्शन दे रहे हैं। ऐसा विचार मन में आते ही आप "हाय मेरे भगवान!" कहते हुये दौड़े। आनन्द की उस अविस्मरणीय बेला में आपकी सुध–बुध मानो खो गई। आप उस महात्मा के चरणों से लिपट गये।

जब आपने आंखे खोलकर ऊपर की ओर देखा तो महात्मा वेश धारण किये भगवान के स्थान पर स्वयं को शिवलिंग से लिपटा हुआ पाया। आपके पास हरिद्वार से लाया हुआ गंगाजल था। उसे हाथ में लेकर आपने आंखे बन्द करके कहा कि – "हे प्रभु यदि मैं आपका सच्चा सेवक हूं तो इस गंगा जल को आप स्वयं ग्रहण कीजिए। उसी अवस्था में आपको पुनः ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे महात्मा जी के उसी वेश में भगवान ने स्वयं अपने हाथ में उनके हाथों को पकड़ उस जल को अपने ऊपर छिड़कवाया,तभी आपकी आंखे खुल गई। आपने देखा कि आपके हाथ का गंगा जल शिवलिंग पर चढ़ चुका है। शिवलिंग धुल चुका है। तभी भगतजी को आदेशानुसार तीन वस्तुओं को प्राप्त करने की बात का ध्यान आया। तब भगत जी ने प्रेम विह्वल होकर तीन वस्तुओं की प्राप्ति हेतु सच्चे मन से प्रार्थना की जिसके फलस्वरूप आपको वहां से भगवान द्वाराएक झण्डा, एक मूर्ति तथा एक शिवलिंग, जिसके विषय में अनेकों श्रद्धालु भक्तजनों ने (केदारपुर में श्री सिद्धेश्वर पशुपति मन्दिर में स्थापित होने के बाद दर्शन करके) बताया कि सच्ची भावना और निर्मल मन से दर्शन करने पर उसमें जटाधारी अलौकिक चेहरे के ऐसे दर्शन होते है कि – जैसे भगवान शंकर हमें ही देख रहे हों। उक्त तीनों वस्तुएं प्राप्त हुई।

आप उस स्थान से अपनी चिर अभिलाषा को पूर्ण करके और भगवान के आदेशानुसार भगवान से ही तीन वस्तुएं लेकर जब वहां से वापस चले तब आपको ऐसा प्रतीत हुआ जैसे – कि किसी सम्मोहन या किसी नशे से आप मुक्त हुये हो। थोड़ी ही दूर चलने पर आपको एक स्थान पर पहुंचते ही अर्न्तमन से ऐसी आवाज आई कि भाई को मैंने यही पर छोड़ा था इसलिए आपने वहीं से अपने भाई रघुवीर का नाम लेकर पुकारा, वह वही पर रास्ते की खोज में पास में ही भटक रहे थे। आवाज सुनते ही वह एकदम से आवाज की दिशा की ओर दौड़ पड़े। कुछ क्षणों बाद ही आपके भाई आपसे मिले। भगत जी ने शिवलिंग व वस्तुओं के उनको भी दर्शन करवाये और फिर वहां से दोनों भाईयों ने वापसी के लिए प्रस्थान किया। देहरादून तक की शेष यात्रा बिना किसी विशेष घटना के निर्विघ्न पूर्ण हुई। देहरादून में अपने निवास स्थान पर आकर आपने तीनों दिव्य वस्तुओं को अपनी कुटिया में रख दिया और मन में यह सोचा कि आने वाली श्रावण मास की पूर्णिमा (रक्षा बन्धन) के दिन इनकी स्थापना श्री सिद्धेश्वर महादेव मन्दिर, केदारपुर में कर देंगे। इस विषय में आपने किसी को कुछ भी नहीं बताया।

सांय काल आपकी धर्मपत्नी अपने नित्य नियम के अनुसार पूजा हेतु पूजा स्थल (जो कि भगत की कुटिया में ही था) गई तो चकित रह गई। उन्हें दिखायी दिया कि एक सर्प एक जटाधारी तेजस्वी चेहरे की गर्दन पर लिपटा हुआ चल रहा है। चेहरे में आंखे बहुत चमक रही थी। सर्प को देख उनका साहस क्षीण हो गया। असमंजस के कारण न तो आगे बढ़ सकी और न ही पीछे हट सकी और न ही कुछ सोच समझ सकी। कुछ क्षणों बाद ही वह सर्प कुछ गतिहीन सा होने लगा। जटाधारी लिंग का चेहरा कुछ धुंधलाने सा लगा, उसकी आंखों की चमक भी क्षीण होने लगी। थोड़ी देर में ही वह दिव्य चेहरा और सर्प दोनों अदृश्य हो गये और उसकी जगह रह गया एक मात्र शिवलिंग। थोड़े से संदिग्ध मन से धीरे–धीरे चलकर भगत जी की धर्मपत्नी शिवलिंग के निकट पहुंची और डरते–डरते उन्होंने उस दिव्य शिवलिंग को स्पर्श किया। जब उन्हें यह विश्वास हो गया कि यह वास्तव में एक शिवलिंग ही है। तब उन्होंने भगत जी को यह चमत्कारिक घटना सुनाई। भगत जी मुस्कुराते हुये बोले तुम धन्य हो, जो भगवान जुमलेश्वर ने तुम्हें साक्षात दर्शन

दिये। यह सब तुम्हारे संस्कारों और न जाने कितने पूर्व जन्मों के शुभ कर्मो का फल है। यह बात सुनते ही वह भी आनन्द से पुलकित हो गयी।

उन्होंने अपना एक अन्य स्वप्न भगत जी को बताया कि," जब आप जुमला महामू पर्वत की यात्रा पर गये हुये थे, उस समय एक दिन मैंने स्वप्न में देखा कि मैं भी आपके साथ वहीं पर्वतों के बीच जा रही हूं। आगे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर एक दीपक जल रहा था। आप तो सीधे जलते हुये दीपक के पास पहुंच गये परन्तु मैं वहां तक न पहुंच सकी। मैंने सोचा कि अगर मैं भी वहां तक पहुंच पाती तो इस दीपक का दर्शन करती। मेरे ऐसा सोचते ही वह दीपक हवा में उड़कर मेरे समीप आ गया। मैंने उसके दर्शन करते हुए जैसे ही प्रणाम किया, वह दीपक उसी भांति वापस अपने स्थान पर चला गया। "इतने में ही मेरी आंख खुल गई।" भगत जी ने समझाया कि यह स्वप्न भी एक प्रकार से अप्रत्यक्ष दर्शन था। हो सकता हे कि जिस दिन मैंने महामू पर्वत पर दर्शन किया हो, उसी रात्रि को तुम्हारे पुण्य फल के प्रभाव से तुम्हें भगवान शंकर ने दीपक में ज्योति बनकर दर्शन दिये हों। "इसी प्रकार शंकर भगवान को अपने प्रति कृपालू मानकर दोनों जन प्रीति पूर्वक रक्षा बन्धन तक महामू पर्वत से लाई गई तीनों वस्तुओं की नियमित पूजा करते रहे"।

श्रावण मास आने पर भगत जी के मन में यह विचार आया कि इन वस्तुओं को किस प्रकार स्थापित करना है। इस विषय में मैं तो कुछ भी नहीं जानता। तभी आपके अन्तर्मन से यह आवाज आई कि तुम क्यों चिन्ता करते हो, भगवान शंकर तुम्हें स्वयं सब बतायेंगे। आपका मन स्थिर हो गया। तभी आपको एक रात स्वप्न हुआ जिसमें आपके भगवान शिव ने पुनः उसी महात्मा के रूप में दर्शन हुये जिनके द्वारा आपको मंदिर व उसमें स्थापित शिवलिंग का ज्ञान हुआ था। उन्होंने ही आपको सब कार्य विधि समझाई। उसी के अनुसार आप केदारपुर निवासी पं. श्री रामेश्वर प्रसाद सेमवाल जी से मिले और उन्हें सम्पूर्ण आदेश के विषय में बताया कि "मुझे पूर्णमासी (रक्षा बन्धन) से पांच दिन पूर्व से एक अखण्ड दीपक जलाकर पांच दिन का मौन व्रत धारण कर, निराहार व्रत रखकर भूमि से पांच फुट ऊपर मंदिर के ऊपरी भाग में पूर्णिमा के दिन प्रतिष्ठा करने का आदेश हुआ है"।

जिस समय आप पं. श्री रामेश्वर प्रसाद सेमवाल जी से यह बता रहे

थे उस समय मौसम बहुत खराब था। थोड़ी–थोड़ी देर में बारिश हो रही थी और हवायें चल रही थी। आगे भी मौसम साफ हो जायेगा ऐसा प्रतीत नहीं हो रहा था। सो पंडितजी ने शंका प्रकट की कि ऐसे खराब मौसम में आपका समाधिस्थ रहना और पांच दिन के लिए अखण्ड दीपक का निरन्तर जलते रहना किस प्रकार सम्भव होगा। आपने अपने अटूट विश्वास का परिचय देते हुए कहा कि – भगवान शंकर जानें, यह सब मैं नहीं जानता। मुझे तो ऐसा करने का आदेश भगवान शंकर ने दिया है। यह कैसे होगायह तो शंकर ही जाने।

दिनांक 4.08.1977 को आपने अखण्ड दीपक प्रज्जवलित किया और साथ ही मौन व्रत धारण कर स्वयं समाधिस्थ हो गये। आपके अटूट विश्वास और निश्छल अनन्य प्रेम की डोर ने मानो पानी की धाराओं और उनमुक्त हवाओं को भी भगवान नाम की गांठ के सहारे बांध लिया। कई दिन से चल रही हवा और वर्षा भगवान शंकर की कृपा से बिल्कुल रूक गई, मौसम बिल्कुल साफ हो गया, आपकी समाधि ओर अन्य सभी कार्य इसी प्रकार चारदिनों तक निर्विघ्न रूप से चलते रहे।

दिनांक 09.08.1977 को श्रावण मास की पूर्णिमा (रक्षा बन्धन) थी। यही दिन स्थापना का शुभ दिन था। भगवान जुमलेश्वर महादेव द्वारा प्रदान की गई तीनो वस्तुओ को विधि पूर्वक पूजन करने के पश्चात स्वंय भगत जी ने डोली में रखाउन्हे सादर अपने सिर पर रख कर नंगे पांव चलकरअपनी कुटिया से मंदिर तक पहुंचाया। (उस समय भगत जी धर्मपुर मे रहते थे) धर्मपुर से केदारपुर में श्री जुमलेश्वर महादवे जी की शिवलिंग मूर्ति व झण्डा तीनो वस्तुओं को बाम्बी के ऊपरी भाग मे प्रतिस्थातिप कियाा गया। तदोपरान्त पूजन आदि सम्पन्न किया गया। अब तो बस भगत जी का मौन खुलना ही शेष था। सो इस महान यज्ञ के पुरोहित श्री रामेश्वर प्रसाद जी ने भगत जी से पूछा "आपका मौन कब खुलेगा"

भगत जी ने एक कागज पर लिखकर बताया कि "यह तो मुझे भी नहीं मालूम यह तो सब शंकर भगवान पर ही निर्भर है" भगत जी अपने आसन पर बैठे थे। सब उपस्थित लोगो की आंखे भगत जी की ओर थी। थोडी देर बाद भगत जी बन्द पलको से आँसुओं की धारा बहने लगी।

प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुसार आपका रूप भी बदल कर कुछ विशेष प्रकार का हो गया और आपका मुंह नव प्रतिस्थापित श्रीजुम्लेश्वर महादेव की ओर मुड़ गया । शरीर थरथराने लगा, धीरे धीरे बुदबुदाहट व बाद में स्पष्ट होती शंकर की आवाज तीन बार सभी प्रेमी भक्तों ने सुनी । जिसे सुनते ही भक्तों द्वारा लगाये गये भगवान शंकर के जय घोष से आसपास का सम्पूर्ण क्षेत्र गूंज उठा । भगत जी के नेत्र खुल गये। समस्त उपस्थित भक्त समाज ने भगत श्री लक्ष्मण जी से आशीर्वाद लिया। कहते हे कि उस समय भगत लक्ष्मण जी का चेहरा एक आलौकिक तेज से चमक रहा था । धीरे धीरे भगत जी पुनः अपने साधारण रूप में आ गये ।

जैसे भक्तजन अपने अपने घरों को चलने को उद्यत हुये भगवान शंकर ने एक चमत्कार और दिखाया कि पांच दिन से रूकी हुई वह वर्षा पुनः प्रारम्भ हो गई । सभी भक्त भीगते हुये अपने–अपने घर चल दिये।

भगवान शंकर जी के आदेशानुसार भगत जी द्वारा इस स्थान को सिद्धपीठ करना

सब भक्तो के जाने के बाद भगत जी ने मन में सोचा कि मैं पांच दिन से तो यहां रह ही रहा हूं आज भी यही रूक जाऊं। यह विचार जैसे ही आपके मन में आया तभी आपको ऐसा लगा कि जैसे कोई उनसे कह रहा हो कि आज यहां कोई नहीं रहेगाा । आप इसे भगवान का आदेश मानकर अपनी कुटिया मे वापस आ गये। उसी रात को स्वप्न में पूर्व आदेश दे चके महात्मा पुनः दिखायी दिये और उन्होने आपको आदेश किया कि 21 दिन तक अखण्ड धुनी जला कर मौन, निराहार रहकर एक पेर पर खड़े होकर तप करों । उसके बाद एक महायज्ञ करके इस स्थान को सिद्ध करों ।

जब प्रातः आपकी आखे खुली तो आप सोचने लेगे कि मैं इस उद्देश्य को कैसे पूरा कर पाऊंगा, 21 दिन एक पैर में कैसे खड़े रह सकूगां । यही सोच कर आपने इस विषय में किसी को बताया भी नहीं, परन्तु बाद में आपको स्वयं ऐसा लगने लगा कि मानो यह कार्य आप अवश्य पूर्ण कर लेगें,

सो आपने उक्त स्वप्न आने के लगभग 3 माह पश्चात इस कार्य को करने का निश्चय करके मंदिर समिति को अपने विचार से अवगत कराया। उन्होने धुनी की समस्त व्यवस्था कर दी ।

आप पांच दिन का मौन धारण करके गुफा में समाधिस्थ हो गये पांच दिन पूरे होने के बाद 12.01.1978 से आप 21 दिन के लिये तप करने हेतु एक पैर से खड़ें होकर तप में लीन हुये जो कि 02.02.1978 को पूरा हुआ। फिर आपने महायज्ञ सम्पन्न कराया। इस प्रकार यह मन्दिर का स्थान सिद्ध किया गया ।

अब इस सिद्ध स्थान के शिवालय के पूजन हेतु एक पुजारी की आवश्यकता प्रतीत हुई । इस विषय में भी आपने भगवान शंकर से प्रार्थना की, जिसके फलस्वरूप महायज्ञ के मात्र एक सप्ताह के उपरान्त जाखन(राजपुर रोड, देहरादून) निवासी ले. कर्नल श्री शमशेर बहादुर जी ने आध्यात्मिक गुरू दार्जिलिंग निवासी बाल ब्रह्मचारी महात्मा श्री आत्मचैतन्य जी उत्तराखण्ड भ्रमण के उद्देश्य से यहां आये। श्री शमशेर बहादुर जी उन्हे देहरादून के सम्पूर्ण तीर्थ घुमाते हुये केदारपुर स्थित इस मंदिर में ले आये। श्री महादेव मन्दिर के नाम से पुकारे जाने वाले एकान्त में दीमक की बाम्बी में बने हुए मंदिर में, जिसमे गौरी शंकर की एक विचित्र जुड़वा शिवलिंग भी था, यहां उस समय तक पानी के अतिरिक्त अन्य कोई सुविधा न थी, श्री आत्म चैतन्य जी के मंदिर में प्रवेश करने के बाद पन्द्रह मिनट तक तो उसी विचित्र जुड़वा शिवलिंग में न जाने क्या देखते रहे। फ़िर उन्होने यहां के विषय में भगत जी से बहुत कुछ पूछा तो भगत लक्ष्मण जी ने उन्हे विस्तार से सब कुछ बता दिया।

श्री शमशेर बहादुर थापा जी ने आत्म चैतन्य जी से यहां पूजन आदि करने वाले की आवश्यकता बतलाते हुये यहां के पुजारी के पद भार को ग्रहण की प्रार्थना भी की, परन्तु उन्होने कोई उत्तर नहीं दिया, और वापस जाखन चले गये। रात्रि मे न जाने उन्हें क्या आभास हुआ जो कि अगले दिन प्रातः ही वे केदारपुर मंदिर में पहुँच कर श्री लक्ष्मण दास जी से मिले और सहर्ष मंदिर के पुजारी का पद भार ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की ।

मंदिर का पुजारी बनते ही श्री आत्म चैतन्य जी ने मंदिर का नाम श्री सिद्धेश्वर महादेव पशुपति आश्रम रखा एवं महामू पर्वत (नेपाल) से लाई गई वस्तुयें स्थापित की । आज भी पूजन के समय शंखनाद की ध्वनी अधिकांशत: होती है।

बहुत से श्रद्धालु प्रेमी और भगवान भक्तों को इस अदभुत शंखनाद को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । कलिकाल के समय में तो पत्थर से शिवलिंग से ऐसी ध्वनि का निकलना आश्चर्यजनक होने के साथ स्वयं भगवान शंकर की वाणी होने का आभास देती है कहते हैं कि ध्वनि सबको सुनाई नहीं देती, केवल सच्ची आत्मा से भगवान का स्मरण करने वालों को ही यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है। कलियुग के इस अनोखे चमत्कार का अनुभव करने व अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु अनेकों भक्त यहां दूर-दूर से आते है । मनोकामना की पूर्ति के लिये भगत लक्ष्मण जी के अनुसार यथाशक्ति सच्चे प्रेम और विश्वावस के साथ मन्दिर मे 21 दिन भगवान कापूजन व 22 वे दिन उद्यापन का नियम है। इस विधि से पूजन करने पर अनेक भक्तों को फल प्राप्त हुआ है।

श्रद्धालु भक्तों की प्रार्थना पर भगवान शंकर के आदेशानुसार चुने गये भक्तों के सहयोग से यहां पर नेपाल के प्रसद्धि पशुपतिनाथ मन्दिर की शैली में एक मन्दिर का निमार्ण करने का कार्य आरम्भ हुआ ।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है, कि यहां पर होने वाले समस्त महत्वपूर्ण कार्य स्वयं भगवान शंकर के आदेश से सम्पन्न होते हैं, जो कि समय समय पर भगवान शंकर भगत लक्ष्मण जी को निमित बना कर देते है । आज भी इस पावन स्थान से संबंधित अनेकों चमत्कार देखने -सुनने मे आते ही रहते है।

भगवान शंकर जी की असीम कृपा से श्री रमशे चन्द्र शर्मा (मोथरोवाला निवासी) को भी भगवान शंकर की इस अदभुत वाणी (शंख ध्वनि) को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । तब से श्री रमेश चन्द्र जी भगत श्री लक्ष्मण जी के परम प्रिय शिष्य बन गयें । वह इस अपूर्व आनन्द देने वाली वाणी को सुन पाने का समस्त श्रेय, अपने गुरू श्री लक्ष्मण जी को ही देते है।

विश्व शान्ति महायज्ञ करने का आदेश

इसी बीच भक्तों द्वारा मन्दिर निर्माण कार्य आरम्भ हुआ भगत जी मन्दिर का कार्यदेखने रोजाना मन्दिर में आया करते थे। किन्तु जिस दिन शिवलिंग को तोड़ा गया उस दिन नहीं आ सकें। दूसरे दिन प्रातः ही जब मन्दिर में जाकर देखा तो शिवलिंग टूटी हुयी हैं यह देखते ही भगत जी ने आंखों से आंसू निकल आये । वह आंसू बहाते हुये अपने घर चल दिये ।

घर जाकर भी वे रोते रहे । इस हालत कोदेख कर उनके पुत्र श्री प्रेम सिंह स्वामी श्री आत्म चैतन्य जी को सूचना देने के लिये मन्दिर में जा रहे थे तो स्वामी जी और श्री कीर्ति सिंह जी बाजार जाने के लिये आरहे थे, रास्ते में मिल गये तो दोनों को रोते हुये अपने पिता की हालत बतांते हुये अपने घर में आने को कहा ।

उस लड़के का हाल देखकर वे दोनों भगत जी के घर आयें । घर से पहुंचाना क्या था, बस जोर जोर से रोते भगत जी ने स्वामी को पकड़ लिया और कहा कि मुझे भगा रहे हो। तुमने मेरे स्थान को उजाड़ दिया । मैं अव नहीं रह सकता ह। उस वक्त भगत जी इस तरह तड़प रहे थें कि इनकी हालत देखी नहीं जाती थी । उस वक्त उनके घर में ऐसा वातावरण हो गया जैसे कि कोई मर गया हो। घर के सभी लोग रो रहे थे। भगत जी तो चिल्लाते हुये फर्श में तड़प रहे थे।

स्वामी जी ने हाथ जोड़कर वेद मंत्रों से प्रार्थना के साथ याचना करने पर काफी देर के बाद कुछ शान्त हुये फिर स्वामी जी एवं कीर्ति सिंह जी को अन्दर पूजा स्थान पर ले जाकर दोनों की और देखकर बोले कि मुझे वहां रहने का स्थान बना दोगे। तब श्री कीर्ति सिंह जी ने कहा कि आप जो चाहेंगे हम पूरा करेगे ।

तब भगत जी के मुंह से आवाज निकली कि मेरा स्थान पहले जैसा था वैसा ही बना दो ओर स्थान बनाने के पश्चात् तीन काम करने होगे । 21 दिन तक एक पैर पर खड़े रहकर तपस्या करेगा, इस के साथ महायज्ञ करवाना होगा।

इन सारी बातों को श्री कीर्ति सिंह ने स्वीकार करते हुये कहा, मैं आपकी सारी बातों को पूरा करूँगा, आप शान्त हो जाये। यह बोलते हुये प्रार्थना की । इस समय भगत जी का चेहरा देखने योग्य न था उनकी आंख और मुंह लाल रंग काहोगया था । पूरे शरीर में कम्पन्न थी। उस वक्त उनके शरीर में स्वयं शंकर जी की ज्योति प्रवेश थी । अन्त में स्वामी जी और श्री कीर्ति सिंह की प्रार्थना पर शान्त हुये ।

फिर उसी समय पण्डित शशिधर जी को साथ लेकर मंदिर में पहुंचे । वहा जाकर श्री कीर्ति सिंह जी ने अपने हाथों से श्री सिद्धेश्वर महादेव जी का स्थान पुनः तैयार करने के पश्चात पण्डित जी ने खण्डित गौरी लिंग निकाल कर उनके स्थान पर दूसरे लिंग, जो कि भगत जी को एक वर्ष पहले पौड़ी गढवाल में मिला थां जिसे आपने घर मे लाकर रखा था उसको लेकर खण्डित लिंग के स्थान मे रख कर शशिधर जी द्वारा स्वमी जी, कीर्ति सिह,भगत जी और प्रेम सिहइन पांचों आदमियों की उपस्थिति में श्री सिद्धेश्वर महादवे ओर माता गौरी का आह्वान करपूजन सम्पन्न किया गया ।

विश्व शान्ति महायज्ञ कार्य प्रारम्भ

श्री कीर्ति सिंह जी ने यज्ञ सम्बन्धी जानकारी पण्डित जी को बताते हुये कहा "पण्डित जी अब श्री सिद्धेश्वर महादेव जी को प्रसन्नकरने हेतु 21 दिन का कार्यक्रम चलाना है । 21 दिन तक भगत जी एक पैर पर खड़े रहकर तपस्या करेगे, और 21 दिन तक अखण्ड धुनी लगेगी । 21 दिन तक सहस्त्र चण्डी पाठ होगा और 21 दिन तक यहां आने वाले साधू, महात्माओं और पण्डितो तथा आने वाले भक्तो के लिय भण्डारा चलेगा । इस महायज्ञ का आचार्य आपको बनना पडेंगा "

सारी बाते को सुनने के बाद पण्डित जी ने कहा, यह कार्य सम्पन्न कर पायेंगे तो इस कार्य से विश्व को शन्ति पहुंचाई जा सकती है। इस यज्ञ का नाम विश्व शान्ति महायज्ञ होगा क्योकि इस प्रकार का महायज्ञ आज तक शायद नहीं हुआ होगा , कयोकि इस तरह 21 दिन एक पैर पर खड़े होकर

घोर तप के साथमहायज्ञ होना दुर्लभ है। इससे सहस्त्र चण्डी पाठ के लिये ग्यारह से 21 तक पण्डित चाहिएं इसके लिए वेदाचार्य पंण्डित चाहिए। अब आप समिति कार्यकताओं को बुलाकर सलाह करें ।

इस राय से भगत जी ने सलाह के लिये समिति के सचिव श्री सुशील चौहान जी के पास जाकर विश्व शान्ति महायज्ञ करने हेतु राय की , किन्तु यह महायज्ञ क्यों किया जा रहा है । इस विषय में सचिव जी को मालूम नहीं था, इस कारण सचिव जी ने कहा " भगत जी विश्व शान्ति महायज्ञ करने को पैसा होता तो हमारे मन्दिर में अभी बहुत कार्य पडा है, उसी को पूरा कर लेते है। विश्व शान्ति महायज्ञ करने के लिये पेसा कहां है? समिति के पास धन नहीं है।

भगत जी ने कहा "यह शंकर जी की आज्ञा है । आप पैसे की चिन्ता न करें" । सचिव जी का कहना भी ठीक ही था उस समय समिति के पास पास सौ रूपया भी नहीं था उस समय समिति के अध्यक्ष श्रीविजय प्रकाश गुप्ता जी थे। उस समय समिति का कार्यकाल भी पूरा हो चुका था । इस कारण उस बीच समिति का चुनाव करना पड़ा । 22 नवम्बर सन् 1988 को समिति का चुनाव हुआ। इसमे सर्वसम्मति से भगत जी को अध्यक्ष पद के लिये चुन लिया गया।

अब भगत जी के पदभार संस्थापक एवं अध्यक्ष पद का भार आ गया । समिति में उपाध्यक्ष श्री कीर्तिनगर सिंह कम्बोज, सचिव मेजर आर. बी. लिम्बु, कोषाध्यक्ष ह. कैप्हन शम्भु सिंह गुरूंग, लेखा परीक्षक श्री शिवानन्द उपाध्याय सदस्य में श्री करण बहादुर आले, श्री प्रेम प्रकाश भुसाल, श्री एन.एस. विषु, श्री दर्शन लाल बिनजौला, श्री छविलाल शर्मा, श्रीदयाराम पोखरियाल, समिति के 12 आदमी नियुक्त हुये चुनाव के पश्चात विश्व शान्ति महायज्ञ के कार्य के लिए समिति की बैठक बुलायी गयी। दिनांक 12 मार्च सन् 1989 को समिति की बैठक हुई । भगत जी का विचार था कि यज्ञ बसन्त पंचमी में शुरू किया जाये । किन्तु पण्डित जी की सलाह से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 2045 (शाके 1910) तदोनुसार मार्च 1989 से विश्व शान्ति महायज्ञ का शुभारम्भ होकर अखण्ड धुनी अष्टोत्तर शत

रूद्रादि, सहस्त्र चंडी पाठ तथा जाप हवन के साथ ही भगत जी द्वारा एक पैर पर खड़े रहकर 21 दिन तक घोर तप तथा जाप के साथ गौरी शंकर की आराधना पूर्वक विक्रम 2046 (शाके 1911) तदानुसार 14 अप्रैल, 1989 की सुप्रभात में रामनवमी तिथि शुक्रवार के दिन विश्व शान्ति महायज्ञ की पूर्णाहुति हुई ।

इस विश्व शान्ति महायज्ञ में धर्माचायों के प्रवचन भारतीय धर्म सामान्य गोष्ठी, गौ रक्षा सम्मेलन, गौ हत्या विरोध सम्मेलन दैनिक वेद–पुराणों की कथा भजन कीर्तन पूजन आरती एवं प्रार्थनायें हुई। धर्मनिष्ठा रखने वाले बन्धु, बहिनें आचार्यगणं देशी विदेशी जन, सांसद विधायकगण, विभागीय अधिकारीगण, समाज सेवक तथा सर्वसाधारण जनों ने इसमें भाग लिया । इसके अतिरिक्त भारतीय धर्म संस्थान, विश्व हिन्दू परिषद, आर्य सभा नानकपंथ, विश्व बौद्ध संघ, महावीर जैन सभा, सभी सेवी संस्थाये, महिला संगठनआदि भाई बहनों को इसमेंभाग लेने के लिये आमंत्रित किया जाये।

समिति की और से आमत्रितो को आवास, सात्विक भोजन, जलपान, चिकित्सा आदि की सुंविधाओं का विशेष प्रबन्धा किया गया। बैठक में सर्व सम्मति से उपरोक्त विषय को पारित किया गया । शंकर जी की लीला अपार है । जिसके द्वारा यज्ञ होना है उसको तो एक स्थान पर खड़ा करके रख दिया और एक वृहद कार्य आरम्भ कर दिया। फिर साथ में पैसा भी न हो, इस हालत में विश्व शान्ति महायज्ञ कैसे आरम्भ होगा ।

इस स्थिति को देखकर कार्यकर्ताओं को भी आश्चर्य सा हुआ । अधिक चिंता तो पण्डित जी को हुई, क्योंकि यज्ञ का भार उनके ऊपर था । फिर उस समय रामनवमी पर्व होने के कारण पण्डित लोगों का मिल पाना कठिन था । एक दिन पण्डित जी भगत जी से कहने लगे कि भगत जी, इस समय रामनवमी पर्व होने के कारण पण्डित लोगो का मिलना कठिन होगा, इस कारण यज्ञ को आगे करना पडेगा।

भगत जी ने कहा पण्डित जी आप यह क्या कह रहे हो। सबने बैठक का दिन भी निश्चित करके प्रस्ताव पारित कर दिया हैं । सब लोगों को सूचित भी कर चुके है । इस हालत में कार्य को कैसे स्थापित किया जा सकता है।

क्या आपको भगवान पर विश्वास नहीं ? आप ऐसा करें कि कल ही आप वृन्दावन जाओं और आपको जितने पण्डित चाहिए , उन्हे लेकर आईये । अगर पंडित न मिले तो हम यज्ञ स्थापित करने पर विचार करेंगे । हम यह समझेगें कि भगवान शंकर का आदेश असत्य है। दूसरे दिन पण्डित जी पण्डितों की खोज में वृन्दावन चले गये। पण्डितों के पास जाकर यहां होने वाले महायज्ञ के विषय में बताया और उसे अच्छी तरह सम्पन्न करने का अनुरोध किया ।

यद्यपि वे दूसरी जगह के लिये नियुक्त हो चुके थे। फिर भी पण्डित शशिधर जी के समझाने पर पं. हरिशरण जी अपना अन्य कार्य स्थगित करके यहां आने के लिये तैयार हो गये।

पण्डित जी को कितने पण्डित की आवश्कता थी उनको लेकर यज्ञ शुरू होने के एक दिन पहले पहुंच गये । प्रातः शहर में शोभा यात्रा निकालने का कार्यक्रम भी था। इस शोभा यात्रा के लिये श्री सुदामा जी, श्री कीर्ति सिंह जी, श्री करण बहादुर जी, मेजर आर.बी. लिम्बु जी सक्रिय रूप से तैनात थे। इस यज्ञ के लिये श्री कीर्ति सिंह जी यज्ञ के अध्यक्ष नियुक्त थे। इनके साथ उपरोक्त सभी लोग अपना कार्य कर रहे थे।

भगत जी पांच दिन पहले गुफा वास में थे। 21 मार्च, 1989 को धूम धाम से शोभा यात्रा शहर की परिक्रमा पूर्ण करके सायंकाल यज्ञ स्थल में आ पहुंचे और शाम को भगत जी भी गुफा से बाहर आये दूसरे दिन 22 मार्च से 21 दिन चलने वाला महायज्ञ आरम्भ होना था तथा 22 मार्च 1989 प्रातः से भगत जी 21 दिन के लिये घोर तप के लिये एक पैर पर खड़े होना था । श्री हरीशरण वेदपाठी जी ने 21 मार्च को यज्ञ मण्डप सजाकर तेयार कर दिया। मण्डप इस प्रकार सजाया था कि वह स्वर्ग लग रहा था । भगत जी के लिये स्थान तपस्थली के साथ ही में बनवाया गया था, जंहा पर 21 दिन एक पैर के सहारे बिताने थे। प्रातः की विधिवत पूजन के साथ भगत जी को तप के लिये तपस्थली में खड़ा कर दिया । साथ ही अखण्ड धुनी जलाकर अष्टोत्तर शतरूद्राभिषेक ओर सहस्त्र चण्डी पाठ का शुभारम्भ हुआ । शंख घण्टी, घण्टा, डमरू की आवाज गूंज उठी तथा

प्रतिदिन ब्राह्मण प्रातः सायं वेद मंत्रों के उच्चारण द्वारा आरती पाठ होता था। इसकी ध्वनि भक्त प्रेमियों का मन मोह लेती थी। मण्डप के दर्शन के लिये भक्त मण्डली का झुण्ड आकर आनन्द का लाभ उठाते थें। इस विश्व शान्ति में देहरादून की जनता ने सहयोग दिया। इस कार्य के लिये मुख्य रूप से श्री कीर्ति सिंह, मेजर आर.बी. लिम्बु, श्री सुदामा प्रसाद, श्री करण बहादुर जी की पत्नी, भगत जी की पत्नी, श्रीमती भवीसरा देवी, श्री प्रेम सिंह, श्रीमति कोशी देवी ओर गांव के सभी लोग रात दिन एक करके पण्डितों, साधू महात्माओं और भक्त लोगो की सेवा में रहते थे।

यज्ञ में जगत गुरू श्री कृष्णानन्द जी अपने शिष्यों के साथ आकर अपने प्रवचनों द्वारा श्रोतागणों को ज्ञान का मार्ग दर्शाया कराते । केदारनाथ के फलाहारी तपसूर्या बाबा ने आकर कई दिनो तक यज्ञ मण्डप में समाधि लगाकर यज्ञ को सफल बनाने में सहयोग दिया। यज्ञ में श्री स्वामी प्रभाकर जी (वृन्दावन वाले) ने भारी योगदान देकर यज्ञ को सफल बनाया ।

यज्ञ में अनेक साधू महात्मा लोगो ने आकर यज्ञ की शोभा बढायी। यज्ञ पाठी ब्राह्मण लोग वृन्दावन, बनारस के थे। देहरादून के पण्डित लोकहारी शास्त्री, तेलपुरा वाले थे। इन्होने यज्ञ को सफल बनाने मे महत्वपूर्ण कार्य किया। पूजन की व्यवस्था के लिये ओर मण्डप तैयार करने का भार श्री रघुवीर सिंह जी पर था। प्रातः तीन बजे से पूजन के लिये मण्डप तैयार किया जाता था । मन्दिर ओर भगत जी की देख रेख के लिये स्वामी आत्म चैतन्य जी रात दिन सेवा में रहते थे। जितनेभ ीयज्ञ में कार्यकर्ता थें, इनमे भगवान शंकर जी ने ऐसी शक्ति दे दी थी जो कि दिन रात दौड़ने पर भी थकते नहीं थे।

इस प्रकार 21 दिन व्यतीत हुये। दिनांक 14 अप्रैल, 1989 को सुप्रभात में रामनवमी के दनि प्रातः सब पाठी पण्डितों द्वारा विधिवत पूजन एवं आरती के साथ भागत जी को तपस्थली से नीचे उतरा गया । सब लोगो ने यह सोचा था कि 21 दिन एक पैर में खड़े होने से शायद वे चल नहीं सकेंगे । किन्तु भगवान शंकर की अपार कृपा थी और भगवान शंकर के आदेश पर ही 21 दिन की तपस्या में गये थे। केवल पांव मे थोड़ी सी सूजन

थी । इनके चेहरे एवं शरीर में किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं था। तपस्थली से यज्ञ मण्डप में ले जाकर मण्डप में पूजन कराने के बाद शिव शान्ति महायज्ञ शुरू हुआ । उस समय वेद मंत्रों के उचारण से मन्दिर गूंज उठा । हजारों लोगो ने शान्ति महायज्ञ के लिये आहुतियां दी । इस प्रकार पूर्ण आहूति के पश्चात आरती एवं प्रार्थनायें हुई । इस प्रकार विश्व शान्ति महायज्ञ सम्पन्न हुआ ।

सहस्त्र रूद्री पाठ एवं चालीस दिन भगत जी का गुफावास

जब 21 दिन का विश्व शान्ति महायज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तो भगत जी को कई वर्ष पूर्व शंकर जी से मिल आदेश का स्मरण हुआ कि 1977 की बात है, जब वे 21 दिन एक पैर पर पहले तप में खड़े थे तो उस समय इनको आदेश हुआ था कि जमीन के नीचे खोदकर गुफा बनाना ओर तुम उस गुफा मे निर्वस्त्र व निराहार ध्यानावस्था में बैठना तुम्हें गुरू मंत्र की दीक्षा मिलेगी । वे मंत्र जिनको तुम दोगे उसका कल्याण होगा । इस स्मरण से आपने सोचा इस समय में निर्मल शुद्धता में हूं क्योकि 25-26 दिन से मैने अन्न ग्रहण भी नहीं किया है। न किसी से स्पर्श हुआ है। इसी समय मुझे गुफा में चले जाना चाहिए। इसी विचार से भगत जी ने यज्ञ समारोह मे घोषणा कर दी कि मै फिर 40 दिन के लिय गुफावास में जा रहा हूँ इस 40 दिन के बीच सहस्त्र रूद्री पाठ होगा और पहले की तरह भण्डारा भी चलेगा । मैं यह चाहता हूँ की जो कोई इन दिनों में भण्डारा देना चाहते है, वे अपना नाम लिख दें इसमें बहुत से लोगो ने इसमें अपना नाम लिखा लिया।

भगत जी की धारणा थी कि जब गुफावास में दीक्षा प्राप्त नहीं होगी तब तक बाहर नहीं आऊगां ।

इसमें प्रवचन, कीर्तन एंव भगवत पुराण पाठ की श्री स्वामी प्रभाकर जी ने स्वयं स्वेच्छा से योगदान करने की घोषणा की । इस कार्य का भार

श्री महात्मा श्री आत्म चैतन्य जी पर था फिर भी बहुत से लोगों ने इस कार्य में अपना सहयोग दिया।

दिनांक 21.04.89 को निश्चित हुआ कि सांय पांच बजे 40 दिन के लिये भगत जी गुफावास में प्रवेश करेंगे।

निश्चित दिन को प्रातः ही भारी संख्या में भक्तों का आना शुरू हो गया। दिन भर भजन कीर्तन चलता रहा। ज्यादा संख्या में महिलायें थी। सायं के समय महात्माओं पण्डितो तथा बहुत से अन्य गणमान्य लोगों के साथ भगत जी मंच मे विराजमान हुये। बाद मे भगत जी उठ खड़े हुये ओर दोनो हाथ जोड़कर कहा मैं चालीस दिन के लिये आप लोगो से विदा होकर गुफा धरती मां के गर्भ में जा रहा हूँ। भगवान शंकर ने रक्षा की तो पुनः जन्म लूंगा ओरउनका आदेश हुआ, तो आप लोगो की सेवा में आऊगा आप लोगो के साथ पुनः मिलूगां।

इन शब्दों को सुनते ही लोगो की आंखों मेंआंसू आ गये। भगत जी गुफा की ओर चल दिये। सारे लोग उनके पीछे हुये ओर गुफा के द्वार में जाकर खड़ें होगये। अब पण्डित श्री लोक हरि जी ने वेदमंत्रों से भगत जी को गुफा के भीतर प्रवेश करने के बाद बाहर से द्वार को ईंटो से बन्द कर दिया। जब दीवार पूरी होने लगी तो अपने सारे वस्त्र उतार कर बाहर दे दिये ओर आप 40 दिन के लिये अनन्त समाधि हेतु गुफा में ही रह गये।

अब चालीस दिन तक बाहर स्वामी प्रभाकर जी ने सभी भक्त मण्डलियों को कीर्तन, प्रवचन एवं भागवत पाठ द्वारा प्रभावित किया और पंण्डित श्री लोक हरि जी ने अपने साथियों के सहयोग से सहस्त्र रूद्री पाठ पूरा किया ओर भंडारा एवं पूजन की व्यवस्था महात्मा चैतन्य जी ओर रघुवीर सिंह जी कर रहे थे। लोग आते, गुफा की परिक्रमा करते और भगत जी की इस घोर तपस्या की सफलता के लिये प्रार्थना करते। भगवान शंकर ने भगत जी को निमित्त बनाकर लोगो को अपनी शक्ति दिखाई कि मैं इस स्थान मे जागृत रूप से भक्तों का कल्याण के लिये प्रत्यक्ष हूँ। ऐसी घोर तपस्या में उत्तीर्ण होना उन सब भक्तों पर भगवान शंकर की ही कृपा है।

भगत जी, गुफा के भीतर शंकर जी ने बहुत कठिन परीक्षा के बाद

नामामृत मंत्र की दीक्षा दी। भगत जी का कहना है कि अठारह–उन्नीस दिन तक तो मेरी समाधि आनन्द से बीती। जब में समाधि अवस्था मे जाता था तो मैं कैलाश पर्वतों पर भ्रमण किया करता था ओर बड़े बड़े साधुओं की मण्डिलयों की सभा में प्रवेश करता था। मैं इतने आनन्द में था कि बता नहीं सकता। मगर अचानक 21 वे दिन मैं बेहोश हो गया। मैं क्या देखता हूँ कि एक आदमी ने एक पुस्तक मुझे दी। मैंने उस पुस्तक में देखा तो उसमें काफी व्यक्तियों के नाम थे। उसमें सबसे ऊपर मेरा नाम लिखा था। मेरे नाम के अंत में "मृत्यु" लिखा था, लिखाई अग्रेजी में थी जैसे:– **Lachman Singh.....Mrityu**

फिर उस पुस्तक के ऊपर मेरी नजर पड़ी तो हिन्दी के साथ शब्दों में एक मंत्र लिखा था। मैने मंत्र को पढा तो उस पुस्तक देने वाले व्यक्ति ने कहा "इसे याद करो, यह नामामृत महामंत्र हैं इस मंत्र को उसे दे सकते हो, जो इसको ग्रहण करने के बाद नियम से चल सके। उसे शिवरात्री, रक्षा बन्धन ओर गुरू पूर्णमासी के दिन इस मंत्र की दीक्षा देना"।

कुछ देर के बाद जब मुझे होश आया तो मेरा दम घुट रहा था और मुझे ऐसी घबराहट हो रही थी कि कहा नहीं जा सकता। बेचैनी के कारण समझ में नहीं आ रहा था क्या करूँ। आखिर शंकर जी जब याद आये तो मेरे शरीर से झनझनाहट के साथ कम्पन्न हुआ। कम्पन इतने जोर से हुआ की में अपने को संभाल नहीं पा रहा था। काफी देर तक मैं कांपता रहा। काफी देर से मुझे नींद आयी। काफी देर तक बेहोशी की हालत मे सोता रहा। लगभग 5–6 घण्टे के बाद आंख खुली तो कुछ थोडी घबराहट कम थी। थोड़ी देर बाद बिल्कुल शान्त हो गयी।

इसके बाद मैने बाकीदिन आराम से बितायें चालीसवें दिन के लिये महात्मा आत्म चैतन्य जी ने काफी तेयारी की हुईथी श्री रमेश शर्मा जी मोथरोवाला वाले, जो कि सप्तऋषि जागरण मंडली के अध्यक्ष है, इन्होने इस जागरण के माध्यम से पूरे देहरादून में प्रचार किया हुआ था कि "29.08.89 को भक्त श्री लक्ष्मण जीं चालीस दिन के गुफावास के बाद बाहर आयेंगे। 28.05.89 की रात को मातेश्वरी भगवती मां का जागरण है।

आप लोग जागरण में आये तथा साथ ही भक्त श्री लक्ष्मण जी के भी दर्शन करें''

इस सूचना से जागरण में हजारों की संख्या में भक्त लोग आयें हुये थे। प्रातः ठीक सात बजे गुफा के मुख्य द्वार की दीवार तोड़ी गयी तथा शंख, घण्टे, ढोल घड़ियाल की आवाजों के साथ पण्डित लोगो ने गुफा में प्रवेश किया। अन्दर भगत जी को वस्त्र पहनायें गये, फिर पण्डितों ने पूजन, आरती के साथ उन्हे बाहर निकाला। गुफा से मन्दिर तक जाने के लिये श्री शमशेर बहादुर थापा जी ने रास्ते की व्यवस्था की हुई थी। फूलों की वर्षा के साथ उनका स्वागत किया गया। सर्व प्रथम भगत जी ने माँ मातेश्वरी जगदम्बा को दण्डवत् प्रणाम किया। बाद में मन्दिर में जाकर पूजन के बाद यज्ञ मण्डप में आकर बैठ गये और यज्ञ किया । पूर्ण आहूति के पश्चात् प्रसाद के साथ भक्त जी ने सभी भक्तों को आशीर्वाद दिया।

इस प्रकार भगत जी की 40 दिन की तपस्या पूर्ण हुई । भगत जी की इस तपस्या का कारण यह था कि जब वे लगभग 12–13 वर्ष की आयु के थे, तब उन्होने एक स्वप्न देखा कि वे कहीं से आ रहे हैं, उन्हे रास्ते में एक महात्मा मिले। भगत जी ने प्रशन किया कि महाराज मैं कैसा निकलूगां? तब महात्मा बोले "तुम तो गुरू बनोगें''। फिर भगत जी ने प्रश्न किया कि मैं कितने दिन जीयूंगा ? वे बोले "55 वर्ष तक।" शायद भगत जी को गुरू बनाने के लिये और 55 वर्ष की मृत्यु से पार लगाने के लिये ही गुफावास कराया हों, क्योकि इस कलिकाल में भक्तों की अति आवश्यकता है।

परम पूज्नीय **श्री सुधांशु जी महाराज** ने जून, 2000 को इस मन्दिर में गोरख गुफा में गोरखनाथ की अखण्ड धूनी प्रज्वलित की, उस दिन उन्हीं शब्दों में "आज तक मैंने अनेक मन्दिर, तीर्थ स्थल तथा सिद्ध पीठों की भ्रमण किया है, दर्शन किया है, वे सभी अपने ही तरीके से प्रसिद्ध हैं, विख्यात हैं और महत्वपूर्ण हैं। आज मुझे श्री सिद्धेश्वर महादेव मन्दिर में जुड़वा शिवलिंग तथा गोरख गुफा के दर्शन व अखण्ड ज्योति को प्रज्वलित करने का सुअवसर मिला। मुझे इस मन्दिर के विशेष महत्व की अनुभूति हुयी।

जिस प्रकार पावन गंगा के उद्गम पर गंगा स्रोत, अति निर्मल, स्वच्छ, अदूषित और पवित्र होती है, उसी समान श्री सिद्धेश्वर महादेव मन्दिर भी निर्मल, स्वच्छ, अदूषित और पवित्र है। गंगा का बहाव जैसे–जैसे आगे बढ़ता है, वह अपने में अनेक स्रोतों को जोड़ती है, पवित्र करती है और आगे चलकर एक विशाल रूप धारण कर सागर से मिलकर महासागर बन जाती है, उसी प्रकार यह शिव मन्दिर समय के बहाव में अग्रसित होकर विकास करते हुये एक विख्यात महासिद्धपीठ बनेगी।

इस शिव मन्दिर के दर्शन से मेरे मन में अवर्णित शांति मिली है और पवित्रता की अनूभूति हुयी है। मैं आश्वासन देता हूँ कि इस मन्दिर के प्रगति कार्य में जिस किसी प्रकार के सहयोग की आवश्यकता होगी मैं यथाशक्ति योगदान करूंगा"।

उत्तराखण्ड के प्रथम मुख्यमंत्री नित्यानन्द स्वामी जब इस मन्दिर में पधारे तो उन्होंने इस मन्दिर के दर्शन से अभिभूत होकर कहा–"मैंने सोचा था कि यह शिव मन्दिर एक आम शिव मन्दिर के समान एक शिवलिंग के साथ होगा। मन्दिर का पुजारी टीका लगा देगा, जलाभिषेक होगा और परिक्रमा कर निपट जायेंगे। परन्तु श्री सिद्धेश्वर महादेव मन्दिर में जुड़वा–लिंग के दर्शन से मुझे शिव शक्ति की अनूभूति हुई। फिर गोरख गुफा से गुजर कर अखण्ड ज्योति, गोरख बाबा तथा अखण्ड धूनि के दर्शन के पश्चात् बाहर निकलने पर मन में अति शांति अनुभव की ओर शिव शक्ति की विशेष अनूभूति हुई। वाकई यह शिव मन्दिर एक तीर्थ–स्थल के योग्य है। इसके विकास के लिए मैं यथायोग्य सहयोग देने का आश्वासन देता हूं"।

स्वामी आत्मा चैतान्ने जी का इस मन्दिर में आना

स्वामी जी दार्जलिंग से कर्नल शमशेर बहादुर जी के घर जाखन में आये हुये थे। कर्नल साहब मन्दिर में ले आये तो हमने उन को मन्दिर के पूजन के लिये मन्दिर में रहने के लिए अनुरोध किया तो उन्होंने हमारे अनुरोध को स्वीकार कर के 17 वर्ष तक मन्दिर के पूजन कार्य और मन्दिर निर्माण कार्य में तन, मन, अर्पन करते हुए इस मन्दिर का उत्थान किया। उन के कार्य को जितना भी सराहना किया जाये कम है।

आरती

।। श्री सिद्धेश्वराय नमः ।।

1 ॐ जय सिद्धेश्वर जय जुमलेश्वराधिशा शिव जय गौरीनाथ

त्वममां पालय नित्यं त्वमम पालयशम्भोः कृपयंजगदीशः,

ओम जय–जय सिद्धेश्वर महादेव.......................

2. स्वप्न में दर्शन दीनों शक्ति सहित शिव शक्ति सहित

भक्त लक्ष्मणजी को पुनमहामुपर्वत जाने को आज्ञा दीनो काम–क्रोधादि

रहित शिव काम, क्रोधादि रहित

झण्डा मूर्ति ली शिवको आये पुनभाई सहित– ओम जय–जय सिद्धेश्वर

महादेव.......................

3. तुम अन्धे पंगु–गूंगे कोपटु कियो, शिव गूंगे को वाचाल कियो –

ओमकारको ध्वनी सुनाई–ओमकार को शब्द सुनायी तारन भक्तन कियो।।

कार्य सिद्ध भक्तन को करी – सिद्धेश्वर नाम कियो हर जुमलेश्वर नाम

कियो

श्रद्धा भक्ति बढ़ायी उद्धार आत्मा कियों – ओम जय–जय सिद्धेश्वर

महादेव.......................

4. रजत समान महामु पर्वत सुन्दर–शिवमहामुपर्वत सुन्दर शक्ति सहित

विराजे

ललाट द्विज चान्द धर गले मुण्डमाला सिरजटाजूट सह हर शिवजटाजूट

सह

सूर्य शशांक नयन माथे हर हर गंगाधर – ओम जय–जय सिद्धेश्वर

महादेव.......................

5. सम्पूर्ण दोष रहित पद्धमासन विराजे – शिव पद्धमासन विराजे

त्रिशूल वज्र परशा तलवार सुन्दर साजे, अभय मुद्रा दक्षिण कर वामहस्त

वलसी, शिववामहस्त वलसी

पञ्चमुख त्रिनेत्र वाले पुन त्रकालदर्शी – ओम जय–जय सिद्धेश्वर महादेव......................

6. नाग पास सहित घन्टा डमरू शिव घन्टा डमरू–विभूत अंग शोभितपुन सुन्दर खपरू,

   कर्ण कुण्डल शोभित वागम्वर कटिधारी शिव बागम्बर कटिधारी

   बदन मधुर शोभित हर–हर त्रिपूरारि– ओम जय–जय सिद्धेश्वर महादेव. ....

7. सावित्री सहित ब्रह्म रमया विष्णु–शिवरमय विष्णु–शेष गणेश धनेश सच्चा सहित जिष्णु, नारद, मुनीरपिवीणा–महतिवादयत, शिव महति वादयत

   नृत्य करत भैरों नृत्य करत काली, भृगां दिगण सहित–ओम जय–जय सिद्धेश्वर महादेव ....

8. विष से भयभीत जब सुरासुर डरे, शिव जव सुरासुर डरे – कीन्ही पान विष को, कीन्ही पान विष को

   जिने कष्ट दूर करें, पुनकरूणा के सागर नीलकण्ठ तुम्हारे हर नीलकन्ठ हमारे

   जन्म मृत्यु बुढ़ापा भय से सदा सर्वदा रक्षा करें – ओम जय–जय सिद्धेश्वर महादेव......................

9. ब्रह्मा, विष्णु, निजरूप शिवको हर अभिन्न रूप तुमको जानत जो कोई एका जानतज जो कोई अभिन्न

   ज्ञान होवे उनको सिद्धेश्वर जी की आरती जो कोई नर गावें हर प्रेम सहित गावे

   कहत आत्मानन्द स्वामी मनवांछित फल पावें – ओम जय–जय सिद्धेश्वर महादेव......................

।। सिद्धेश्वर महादेव जी की जय ।।

श्री सिद्धेश्वर महादेव मन्दिर में होने वाले पर्वों की सूची

शिवरात्रि : सभी पर्वों में सबसे प्रमुख पर्व, महा शिवरात्री। जो कि प्रतिवर्ष फाल्गुन माह में मनाया जाता है। इस पर्व में जल चढ़ाकर पूजा अर्चना की जाती है। महा शिवरात्रि में श्री सिद्धेश्वर महादेव का महा पूजन होता है। इस दिन रात्रि को जागरण के साथ चार पहर का पूजन होता है तथा बहुत बड़ा मेला भी लगता है।

गुरू पूर्णिमा : प्रत्येक वर्ष जुलाई (आषाढ़) माह में गुरू पूर्णिमा के अवसर पर सत्संग तथा योगाभ्यास आदि का कार्यक्रम होता है। जो गुरूमुख वाले तथा भक्ति मार्ग की खोज करने वाले भक्त लोग आश्रम में आकर रहते हैं तथा गुरू सेवा व शंकर जी की पूजा अर्चना करते हैं। इस पर्व में गुरू–महत्व के विषय में प्रवचन होता है। तीन से पांच दिन का कार्यक्रम होता है। आश्रम में ठहरने वालों की भोजन आदि की व्यवस्था आश्रम में ही होती है।

गुरू पूर्णिमा के दिन श्री सिद्धेश्वर महादेव पशुपति आश्रम में श्री सिद्धेश्वर जी की नामामृत मंत्र की दीक्षा प्राप्त होती है। इस प्रकार गुरू पूजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न होता है।

रक्षा बन्धन : प्रत्येक वर्ष के श्रावण माह के अन्त में रक्षा बन्धन का पर्व आता है। इस पर्व पर श्री जुमलेश्वर महामू पर्वत में भगवान शंकर द्वारा भक्त श्री लक्ष्मण जी को प्राप्त वस्तुयें, झण्डा, प्रतिमा एवं शिव लिंग का वार्षिक महापूजन होता है। इस पूजन में भगत जी पांच दिन के लिये निराहार गुफावास में रहने के बाद पूर्णिमा के दिन गुफा से निकलने के बाद पूजन हवन करके भगत जी का मौन खुलता है। उस दिन भगत जी पर स्वयं जुमलेश्वर जी की शक्ति होती है।

सभी लोग भगत जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इसी दिन अमरनाथ और जुमला महामू पर्वत में भी शिव का पूजन होता है। श्री सिद्धेश्वर मन्दिर में इस पूजन का विशेष महत्व है।

भगत जी को गुफावास के समय जो नामामृत मंत्र प्राप्त हुआ था, उस मंत्र की दीक्षा रक्षा बन्धन, गुरू पूर्णिमा तथा शिवरात्रि के दिन ही दी जाती है। यह भी उन्हें प्राप्त होती है, जिन पर सिद्धेश्वर की कृपा होती है। यह कार्य भण्डारे के उपरान्त समाप्त हो जाता है। जिन लोगो को भगत जी मंत्र देते है उन पर स्वयं श्री सिद्धेश्वर महादेव जी की कृपा रहती है।

केदारपुरम स्थित सिद्धेश्वर महादेव मंदिर में दीवारों से निकलते दूध जैसे पदार्थ को दिखाते महंत भगत लक्ष्मण दास।

[illegible]दिर की दीवारों से निकल रहा दूध

देहरादून : कलयुग में भी चमत्कार होते हैं, इसके पहले भी कई प्रमाण मिल चुके हैं। दून शहर के एक मंदिर में भी आजकल ऐसा ही चमत्कार देखने को मिल रहा है। मंदिर की दीवारों से फूट रही दूध की धाराओं को देखकर श्रद्धालु हैरत में हैं। कोई इसे प्रभु के चमत्कार के रूप में देख रहा है तो सामान्य घटना करार दे रहा है। बहरहाल मंदिर की दीवारों से निकलने वाले इस दूध को देखने के लिए केदा[illegible] स्थित सिद्धेश्वर महादेव मंदिर में भक्तों का तांता लगा हुआ है। सिद्धेश्वर महादेव मंदिर की दीवारों से पिछले कुछ समय से पानी की धाराएं फूट रही थीं। इन्हें रोकने के लिए करीब चार दिन पूर्व महंत भगत लक्ष्मण दास ने निर्माण कार्य शुरू कराया। निर्माण कार्य पूरा भी नहीं हो पाया था कि इसी बीच दीवारों से दूध जैसे पदार्थ के रिसने की शुरुआत हुई। इसे भगवान का चमत्कार मानते हुए म[illegible]त भगत लक्ष्मण दास ने निर्माण कार्य बीच में ही रुकवा दिया। मंदिर के [illegible]ष्णत [illegible]ण दास के मुताबिक यह कोई सरल घटनाक्रम नहीं [illegible]ल्कि भगवान [illegible] चमत्कार है।

स्वामी आत्मा चैतान्ने जी

भगत लक्ष्मण दास जी

मूल्य रू 15 रुपये मात्र
साजसज्जा एवं मुद्रक :

स्वास्तिक कम्युनिकेशन

श्री सिद्धेश्वर महादेव मन्दिर
केदारपुर, मोथरोवाला रोड,
देहरादून (उत्तराखंड)